RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 09 | अंक 08 | हिन्दी (मासिक) | अगस्त 2022 | पृष्ठ 16 | मूल्य ₹ 12.50

ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

स्वागत भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा धर्मपत्नी के साथ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन पहुंचे

- पूर्व में भी संस्थान के कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं अध्यक्ष नड्डा, संस्थान से है गहरा जुड़ाव

ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग से राजकाज के लिए मिलती है ऊर्जा -जेपी नड्डा

संस्थान की ओर से किया गया जोरदार स्वागत, भाजपा के प्रदेश पदाधिकारी भी रहे मौजूद

5000+ लोग रहे मौजूद

02 दिवसीय भाजपा का प्रशिक्षण शिविर ज्ञान सरोवर में आयोजित

02 दिन तक भाजपा पदाधिकारियों ने सीखा राजयोग

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भाग लिया। नड्डा के शांतिवन पहुंचने पर संस्थान के पदाधिकारियों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। डायमंड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि आज अत्यंत खुशी हो रही है कि मुझे संस्थान के मुख्यालय में आने का अवसर मिला। ज्ञान सरोवर भी गया। दस वर्ष पहले मैं वहां आया था उसके बाद कई बार आने का सौभाग्य मिला। उन्होंने अपनी पुरानी यादें ताजा करते हुए कहा कि मैं जब भी यहां आता हूं तो मुझे राजकाज के लिए नई ऊर्जा मिलती है।

बता दें कि भाजपा का प्रदेश स्तरीय प्रशिक्षण शिविर माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर अकादमी में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेशभर से पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया। शिविर में खास बात यह रही कि इसमें सुबह-शाम मेडिटेशन सत्र आयोजित किए गए।

शिविर में राजयोग सिखाया गया

उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण शिविर में संस्थान की ओर सबके मन में सात्विकता आए, सद्भावना आए, समाज के विकास में हम सब जुड़े और भारत उसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे। इसके लिए राजयोग सिखाया गया। विश्व में शांति के लिए भारत योगदान दे, यही कामना करता हूं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास भाव से देश में काम हो रहा है, जो भारत को विश्व गुरु बनाने की ओर ले जाने के लिए अग्रसर है।

संस्था ने लोगों को जोड़ने का कार्य किया

भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के तहत संस्थान ने 15 हजार कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को जोड़ने का कार्य किया है। योग सिर्फ शारीरिक ही नहीं, मन का योग भी होता है, इसके लिए संस्थान कार्य कर रही है। राजयोग से चिंतन और योग से मन और शरीर दोनों मजबूत होते हैं। राजयोग के माध्यम से संस्थान कार्य कर रही है जिससे लोगों में परिवर्तन हो रहा है। संस्थान ने पौधारोपण के कार्यक्रम में लाखों पौधे लगाए हैं। मैं संस्थान का आभारी हूं कि मुझे यहां आने का मौका देते हैं। यहां आकर ऊर्जा लेकर में आगे पार्टी में उस ऊर्जा का संचार करता हूं।

शांति के लिए मातृशक्ति का बड़ा योगदान है-

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि वर्तमान समय पूरा विश्व नाजुक दौर से गुजर रहा है, जहां हमारे देश की अहम भूमिका है। ब्रह्माकुमारीज़ में शिव बाबा ने महिला शक्ति को, मातृशक्ति को आगे रखा है मातृशक्ति जब साथ मिल जाती है तब विजय होना अवश्यंभावी है। शांति के लिए मातृशक्ति का बहुत बड़ा योगदान है। अगर आज दो देश तबाही की ओर जा रहे हैं- रशिया और यूक्रेन। दोनों से भारत के रिश्ते अच्छे हैं। अगर इन दोनों देशों में राष्ट्रपति महिला होती तो आज युद्ध के दिन देखने नहीं पड़ते।

ये भी रहे मौजूद-

इस अवसर पर बीजेपी के संगठन मंत्री चंद्रशेखर, प्रदेश अध्यक्ष सतीश पुनिया, सांसद देवजी पटेल, विधायक जगसीराम कोली, समाराम गरासिया, जिलाध्यक्ष नारायण पुरोहित, जिला प्रमुख अर्जुन पुरोहित, पूर्व मंत्री ओटाराम देवासी, सुरेश कोठारी, प्रदेश मंत्री भजनलाल शर्मा, बीके मृत्युंजय समेत वरिष्ठ नेता उपस्थित थे।

राजयोग मेडिटेशन को जीवनशैली में अपनाएं

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी ने आग्रह किया कि राजयोग को अपनी जीवनशैली में अपनाएं। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती ने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि नड्डाजी अपनी धर्मपत्नी के साथ आए हैं। विदेश में भी भारत का तारा बुलंद दिख रहा है। शारीरिक योगा के साथ मानसिक योगा को भी पूरी दुनिया में फैलाने में यह सरकार सफल हुई है। बाद में आपने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास भी कराया। बीके प्रकाशचंद ने आभार व्यक्त किया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के देश-विदेश के सेवाकेंद्र पर मनाया गया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

5000 सेवाकेंद्रों से दिया योग का संदेश

व्यायाम-प्राणायाम से तन और राजयोग से दूर होते हैं मन के रोग

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष

Yoga for Harmony & Peace

08 वां योग दिवस 21 जून 2022 को मनाया गया

5000+ सेवाकेंद्रों पर हुए योग के कार्यक्रम

25 लाख लोगों तक पहुंचा राजयोग का संदेश

भारतीय संस्कृति का उद्भव ही योग से होता है। योग और सनातन संस्कृति भारत की पहचान और परंपरा है। योग ही वह मूलमंत्र है जो हमें तन और मन से सदा स्वस्थ रखता है। व्यायाम और प्राणायाम से जहां हम शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, वहीं राजयोग मेडिटेशन से मन के विकार दूर होते हैं। दया, करुणा के लिए राजयोग थीम पर इस बार ब्रह्माकुमारीज के देशभर में स्थित पांच हजार सेवाकेंद्रों पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनके माध्यम से पांच लाख लोगों को जीवन में राजयोग अपनाने और सुखमय-आनंदमय जीवन बनाने के सूत्र बताए गए। साथ ही प्राणायाम, सूर्य नमस्कार के माध्यम से शरीर को स्वस्थ रखने की कला सिखाई गई।

यूके के वाणिज्य दूतावास में योग दिवस मनाया

- बीके भाई-बहनों ने दिया राजयोग मेडिटेशन का संदेश

» शिव आमंत्रण, लीसेस्टर (यूके)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर भारत के बर्मिंघम स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास के हार्मनी हॉल लीसेस्टर में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने प्राणायाम, योगासन के साथ राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन पर गहराई से प्रकाश डालते हुए जीवन में इसके प्रयोग से होने वाले फायदों से रुबरु कराया।

कल्पतरुह अभियान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ की देशव्यापी अभिनव पहल

देशभर में अब तक डेढ़ लाख से अधिक फलदार पौधे रोपे

- प्रत्येक पौधे को एक विशेष नाम जैसे- आनंद, प्रेम आदि दिया जाता है
- प्रत्येक पौधे की सुरक्षा के लिए एप से किया जा रहा है कनेक्ट
- ऑनलाइन एप से रखी जा रही है प्रत्येक पौधे की जानकारी
- 25 अगस्त तक चलाया जाएगा अभियान

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ का एक अनोखा अभियान है कल्पतरुह पौधारोपण अभियान। एक व्यक्ति, एक पौधा के ध्येय वाक्य को लेकर अभियान की नींव 5 जून 2022 को रखी गई। जिसका समापन 75 दिन बाद 25 अगस्त को किया जाएगा। अभियान के तहत देशभर में अब तक डेढ़ लाख से अधिक पौधे रोपे गए हैं। अभियान भारत के साथ दस अन्य देशों में भी चलाया जा रहा है। इसमें बीके भाई-बहनें उत्साह के साथ भाग ले रहे हैं। बता दें कि अभियान के तहत 40 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कल्पतरुह एप के माध्यम से इस पूरे अभियान की निगरानी की जा रही है। अभियान के तहत संस्थान के देशभर में स्थित पांच हजार सेवाकेंद्र और 50 हजार गीतापाठशालाओं के माध्यम से पौधारोपण किया किया जा रहा है।

10 देशों में चल रहा है अभियान

1100 पौधा रोपण के कार्यक्रम हुए

1900 स्थानों पर रोपे गए हैं पौधे

एक नजर- देशभर में अब तक रोपे गए पौधे

राज्य	पौधों की संख्या
राजस्थान	39281
गुजरात	20381
हरियाणा	13857
दिल्ली	8602
कर्नाटक	8237
झारखंड	5437
मध्यप्रदेश	5026
ओड़िसा	870
छत्तीसगढ़	1106
उत्तर प्रदेश	3915
महाराष्ट्र	1532
आंध्र प्रदेश	2127
उत्तराखंड	618
तेलंगाना	650
पश्चिम बंगाल	949
असम	419
पंजाब	958
केरला	772
तमिलनाडु	805
अरुणाचल प्रदेश	500
बिहार	885
अन्य स्थानों पर	30000

कल्पतरुह से समाज को मिलेगी एक नई प्रेरणा

प्रकृति में भी चेतना, प्राण होते हैं। जो प्रकृति की रक्षा करता है प्रकृति भी उसकी रक्षा करती है। पर्यावरण की दृष्टि से तीन बड़ी चीजें हैं- पहला है क्लाइमेट चैंज। मनुष्य ने जो भी तरक्की की है वह है ऊर्जा का उत्पादन। यूनाइटेड नेशन फ्रेमवर्क कन्वेंशन क्लाइमेट चैंज की ग्लासगो में आयोजित 26वीं कन्वेंशन में हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा कि है कि भारत इस दुनिया के समाधान के लिए इन्वॉयरमेंट फ्रेंडली लाइफ स्टाइल के लिए योगदान देगा। इसके लिए प्रधानमंत्री जी ने जो लक्ष्य निर्धारित किया था उससे अधिक प्राप्त कर लिया है। इस कार्य में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान भी अहम भूमिका निभा रहा है। कल्पतरुह अभियान से समाज को एक नई प्रेरणा मिलेगी।

• भूपेंद्र सिंह यादव, केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री, भारत सरकार

प्रकृति बचाने के लिए संस्थान का नेक कदम

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मानव और प्रकृति के संरक्षण को लेकर चिंतित है। संस्थान कई क्षेत्रों में बड़े परिवर्तनकारी कार्य कर रही है। संस्थान ने आज प्रकृति को बचाने के लिए जन आंदोलन बनाकर बहुत ही बड़े स्तर पर कल्पतरुह अभियान चलाने का जो बीड़ा उठाया है, इस नेक कदम के लिए आप साधुवाद के पात्र हैं। ब्रह्माकुमारीज़ ने पूरे विश्व के अंदर शांति, अहिंसा, एकता और सद्भाव का संदेश दिया है, इसके लिए मैं संस्था को शुभकामनाएं देता हूं। सत्य की राह पर चलने के लिए संस्थान नौजवानों को मार्गदर्शन दे रही है। स्वर्णिम भारत अभियान के माध्यम से हमें सामूहिक रूप से कार्य करने की आवश्यकता है।

• ओम बिरला, लोकसभा स्पीकर, नई दिल्ली

बीके भाई-बहनों के साथ मप्र के मुख्यमंत्री ने भी रोपा पौधा

» शिव आमंत्रण, भोपाल। कल्पतरुह अभियान के तहत मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के साथ पौधारोपण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का उद्देश्य राजयोग ज्ञान द्वारा मानव जीवन में मूल्यों की पुनर्स्थापना करना है। सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन द्वारा शिक्षा, महिला, चिकित्सा आदि प्रभागों द्वारा विभिन्न वर्गों की सेवा की जाती है। अनुकरणीय कार्य के लिए शुभकामनाएं। इस मौके पर सुख-शांति भवन की निदेशिका बीके नीता, बीके अनुराधा, बीके डॉ. दिलीप नलगे, बीके हेमा, बीके डॉ. संजीव, बीके राम सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

संदेश

बिहार विधानसभा में राजयोग मेडिटेशन पर सेमीनार आयोजित

विधानसभा में राजयोग का बताया महत्व

शिव आमंत्रण, पटना। बिहार विधानसभा एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विधानसभा के सेंट्रल हॉल में तनावमुक्त जीवन जीने की कला विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में राजयोगिनी बीके ऊषा माउंट आबू से पधारीं। इस दौरान उन्होंने राजयोग मेडिटेशन को गहराईपूर्वक बताया।

विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि यह संस्था आत्मा और शरीर का ज्ञान देकर समाज में एकता और भाईचारा लाने का काम करता है। विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण ने संस्था के साकार संस्थापक दादा लेखराज को याद करते हुए कहा कि बाबाजी एक बिजनेसमैन थे। वह भी हीरे जेवरात का बिजनेस करते थे। ईश्वरी शक्ति प्राप्त होने के कारण उन्होंने इस संस्था की स्थापना की जो आज एक वटवृक्ष की तरह विस्तार पा रही है। इस मौके पर शिक्षा एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय चौधरी, विधानसभा उपाध्यक्ष महेश्वर हजारी, अन्य मंत्री एवं विधायकगण उपस्थित रहे। राजयोगिनी बीके संगीता ने संस्थान का परिचय दिया।

ब्रह्माकुमारीज़ पूरे विश्व में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है: केंद्रीय मंत्री शेखावत

शिव आमंत्रण, आबू रोड। भारत देश संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है। इसकी छवि पूरे विश्व में दिखती है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की बहनें इसे पूरे विश्व में फैलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मेरा बहुत लंबे काल का संस्थान से जुड़ाव रहा है। मेरी माता जी भी इस संस्थान से संबंध रखती थीं। तब से इच्छा थी कि माउण्ट आबू आऊं लेकिन आज यह संयोग मिला है। अब समाज में एक अलग बदलाव की अलख है। सकारात्मक और मूल्यनिष्ठ सोच से समाज की अबोहवा बदलती है। मुझे खुशी है कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दुनियाभर में अपना नेक कार्य कर रहा है। उक्त उद्गार केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने व्यक्त किए। शांतिवन के डायमंड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि आजादी से अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर विषय पर जो अभियान चलाया गया था वह आज पूरे तेजी से आगे बढ़ रहा है। संस्थान ने बहुत ही कम समय में अपना लक्ष्य पूरा कर लिया है। मंत्री शेखावत ने राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी से भी मुलाकात की।

बीके कमला दीदी ने राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, रायपुर। राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार द्रोपदी मुर्मू छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर पहुंचीं। यहां इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने मुर्मू से मुलाकात की। बीके कमला दीदी ने उन्हें आत्मस्मृति का तिलक लगाया। ईश्वरीय स्लोगन और गुलदस्ता भेंट किया। इस मौके पर बीके सविता, बीके मनीषा, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक, केंद्रीय राज्य मंत्री रेणुका सिंह, सहारा समय की ब्यूरो चीफ प्रियंका कौशल उपस्थित रहीं।

खेलों में सफलता फिजीकल से ज्यादा मानसिक स्थिति पर निर्भर: बीके निर्वैर

एयरफोर्स में रणजी खेलने वाली टीम पहुंची शांतिवन

शिव आमंत्रण, आबू रोड। भारतीय वायु सेना में रणजी ट्रॉफी खेलने वाले 16 सदस्यों की टीम ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान आबू रोड पहुंची। खेलकूद प्रभाग द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण में खिलाड़ियों ने खेलों में सफलता के लिए मन की सकारात्मक स्थिति कैसे बनाएं, राजयोग ध्यान और मन की शक्ति बढ़ाने का प्रशिक्षण लिया। महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि जब मन से सकारात्मक और आशावादी हो जाते हैं तो सफलता गले का हार है, इसे अपने मन में बिठा लेना चाहिए। राजयोग ध्यान से आध्यात्मिकता की शक्ति आती है। यही मन को शक्तिशाली बना देती है। टीम ने अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय से भी मुलाकात कर राजयोग सीखने का अनुभव साझा किया।

सफलता के चक्कर में महिलाएं न भूलें अपनी शक्ति और अस्तित्व: अर्चना शर्मा

महिला सम्मेलन में पहुंचीं देशभर की महिलाएं

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में महिला सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर की अपने-अपने क्षेत्र की जानीं-मानी महिलाओं ने भाग लिया। सम्मेलन में राजस्थान सोशल वेलफेयर बोर्ड की अध्यक्षा डॉक्टर अर्चना ने कहा कि नारी में बड़ी शक्ति है। महिलाओं में शक्ति की पुंज हैं। आजकल तो कामकाज के साथ घर के सारे काम भी करतीं और परिवार भी चलातीं, परन्तु महिलाओं को सफलता के चक्कर में अपनी शक्ति और अस्तित्व को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में महिलाओं को उच्च सम्मान दिया जाता है। यहां का राजयोग नारी को शक्ति का रूप देता है। इसलिए हमें अपनी पहचान को बनाए रखना चाहिए। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम इंटरप्राईजेज मंत्रालय के राष्ट्रीय बोर्ड के सदस्या रश्मि मिश्रा ने कहा कि जहां नारी का सम्मान होता है, जहां नारी की उपस्थिति होती है वहां देवताओं का वास होता है और मुझे आज सबको देखकर लग रहा है कि बाबा का आशीर्वाद हमें मिल रहा है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि हिन्दू धर्म में नारियों को देवी का दर्जा प्राप्त है। ब्रह्माकुमारी में जाकर मेडिटेशन करना शुरू किया तब मुझे पता चला की आध्यात्म का मतलब क्या है। जब तक हम आध्यात्मिक तौर पर जुड़ेंगे नहीं, बच्चों को घर में सही और गलत की शिक्षा नहीं देंगे, तब तक हमारा देश और समाज सफल नहीं हो पाएगा। एनेस्थिसिया की प्रोफेसर डॉक्टर उषा किरण ने कहा कि नारी दुनिया को स्वर्ग बना कर दिखाएगी और कुछ समय में ही सबने देख लिया कि सारे दुनिया में ब्रह्माकुमारी बहनें इसमें सफल हो रही हैं। फिल्म समीक्षक और लेखक भावना सोमैया ने कहा कि मैं ऐसा मानती हूं कि एजुकेशन, मनी और सक्सेस एम्पॉवरमेंट नहीं है। एम्पॉवरमेंट सेल्फ कॉन्फिडेंस है और सबसे ज़्यादा आपको क्या तालीम दे रही है। आपके साथ सब अच्छा ही होता है अगर आप अच्छी नीयत रखो तो हमारे माँ बाप अच्छी वैल्यू हमें देते हैं।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा बीके चक्रधारी दीदी ने कहा कि एक दैवी सृष्टि बनाने के लिए महिलाओं का स्प्रिचुअल एम्पावरमेंट होना बहुत ज़रूरी है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके डॉ. सविता ने भी संबोधित किया।

संत समागम] शांतिवन में पांच दिवसीय अखिल भारतीय संत समागम आयोजित, संत-महात्मा बोले-

परमात्मा के सत्य स्वरूप को पहचानना जरूरी

शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन में 18 से 22 जून तक पांच दिवसीय अखिल भारतीय संत समागम आयोजित किया गया। इसमें देशभर से संत-महात्मा, महामंडलेश्वर और पीठाधीश्वर ने शिरकत की। परमात्मा का सत्य स्वरूप क्या है विषय पर आयोजित संत समागम में देशभर से पधारे सभी महात्माओं ने एक स्वर में कहा कि विश्व शांति और सद्भाव के लिए परमात्मा के सत्य स्वरूप को पहचानना जरूरी है। परमात्मा एक हैं। ज्योर्तिस्वरूप हैं। परमपिता परमात्मा ही विश्व की सभी आत्माओं के पिता हैं। शिक्षक और सद्गुरु हैं। संत समागम में देशभर से 500 से अधिक संत-महात्मा सहित पांच हजार से अधिक लोग पधारे।

प्रधानमंत्री ने भेजा संदेश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संदेश भेजकर संत सम्मेलन की सफलता की कामना की है। उन्होंने कहा है कि लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान कर राष्ट्र प्रगति के लिए प्रयास करना है। मुझे विश्वास है संत समाज इस सम्मेलन से पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति की झलक जाएगी।

इन्होंने भी दी शुभकामनाएं

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला, ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी, बीके जयंती ने भी लंदन से संदेश भेजा। समागम में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, दिल्ली पांडव भवन की प्रभारी बीके पुष्पा, धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा बीके मनोरमा, मुख्यालय संयोजक बीके रामनाथ, सिरसी कर्नाटक से पधारीं बीके बीना, बीके सपना ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके आशा ने किया।

देशभर से पधारे संत-महात्मा, महामंडलेश्वर और पीठाधीश्वर

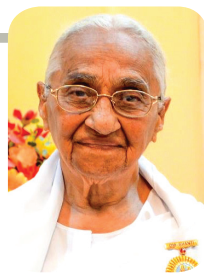

"पूरा विश्व एक परिवार है। हम केवल शरीर के रूप में बंटे हैं। परन्तु हमारी वह पहचान नहीं हैं। परमात्मा शिव ने हमारी पहचान आत्मा के रूप में दी है। इसलिए हम आत्मा के रूप में भाई-भाई हैं। राजयोग ध्यान से ही हमारे जीवन में बदलाव आएगा।"

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

"ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में प्रवेश करते ही यह एहसास हो जाता है कि भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान में कितनी ताकत है। यहां चारों ओर परमात्मा ही परमात्मा नजर आता है। मैं इस सम्मेलन में बुलाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान को बधाई देता हूं।"

कृष्ण चरणानंद भारती महाराज, पीठाधिपति, यग्यनवालय राजाश्रमम, येल्लुरु

"धर्म कोई भी हो मानवता का संदेश देता है। व्यक्ति को चाहिए कि वह प्रेम का दीपक जलाए न कि नफरत की आग। भारत देश अहिंसा और शांति का पुजारी है। भारत का प्रत्येक नागरिक पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरे विश्व में शांति का संदेशवाहक बन गया है। भारत देश में परमात्मा का सिद्धांत सर्वमान्य रहा है। परमात्मा शिव सभी देवों के देव हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना भी परमात्मा शिव ने किया है। यहां के कण-कण में में जिधर देखो उधर परमात्मा की खुशबू आती है। राजयोग ध्यान से जीवन में सकारात्मक बदलाव आएगा।"

स्वामी यमुना पुरी महाराज
महामंडलेश्वर, वेदांताचार्य जूना अखाड़ा

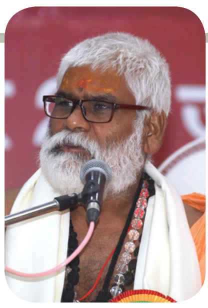

"आज पूरे विश्व में शांति और सद्भाव की अति आवश्यकता है। इसके लिए परमात्मा के सत्य स्वरूप को पहचानना जरूरी है। यदि एक परमात्मा और एक परिवार का सिद्धांत प्रतिपादित हो जाए तो निश्चित तौर पर पूरे विश्व में असमानता समाप्त हो जाएगी। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन से एक लौ निकलेगी जो पूरे विश्व को आलोकित करेगी। यह संत सम्मेलन उसकी नींव है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का ज्ञान और परमात्मा के पहचान की परिभाषा में कोई विरोधाभास नहीं हैं। हम सबको मिलकर विश्व शांति का प्रयास करना चाहिए।"

स्वामी राजशेखरानंद
महामंडलेश्वर, शंकर शक्ति आश्रम, वृंदावन

भारत देवी-देवताओं का देश है। यहां की सभ्यता में वो मूल्यों की पूंजी है जो दूसरे देशों में कम देखने को मिलती है। यदि मनुष्य का जीवन मूल्यों से सुसज्जित हो तभी वह देवी-देवताओं के समान हो जाता है। यह सिद्धांत तभी लागू होगा जब हम परमाता के रूप और धर्म को पहचानेंगे।

- महास्वामी शिवरूद्र महाराज,
बेलीमठ संस्थान, चमराजपेट

परमात्मा ने खुद ही अपना नाम, स्वरूप बताया है। आत्मा और परमात्मा का स्वरूप एक ही है। दोनों का ही स्थान परमधाम है। दोनों का ही रूप एक है। हम सभी परमात्मा की संतान हैं। राजयोग ध्यान, आध्यात्म की शक्ति से ही मनुष्य को ताकत आती है।

- स्वामी सर्वानंद सरस्वती,
अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय भजन सुखमेवा मिशन, दिल्ली

परमात्मा सबका एक है। हम सबकी उनकी संतान हैं। इसलिए हम सभी को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए।

- स्वामी हरी हरानंद,
महामंडलेश्वर, गिरनार जूनागढ़

आज हिंसा की खबरें विचलित करती हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम एक ऐसे माहौल का निर्माण करें ताकि विश्व में शांति हो और परमात्मा की पहचान हो।

- आचार्य अरविंद मुनि

सम्मेलन को बुलाने का एक ही मकसद है कि परमात्मा के सत्य स्वरूप को पहचाना जाए, क्योंकि हम सब एक ही परमात्मा के बच्चे हैं। इसको भूलने के कारण ही तमाम विषमताएं पैदा हो रही हैं। एक ईश्वर, विश्व एक परिवार इस महान उद्देश्य को लेकर संस्थान जुटा हुआ है। परमात्मा ही विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता हैं।

- बीके बृजमोहन, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

ब्रह्माकुमारी बहनों की त्याग और तपस्या पूरे विश्व को आलोकित कर रही है। परमात्मा शिव बाबा हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है। पूरे विश्व में यह संस्थान फैल गया है, इसी सिद्धांतों के साथ यह इसका प्रमाण है।

- प्रेमानंद गिरी महाराज,
महामंडलेश्वर, सन्यास आश्रम, मुंबई

संपादकीय

बुराईयों के जकड़न से सदगुणों का करें बंधन

हमलोग समाज के श्रेष्ठ प्राणी है जिन्हें मनुष्य कहते हैं। समाज में आपसी भाईचारे, अपनत्व, निःस्वार्थ प्यार, अहिंसा, विश्व बन्धुत्व यह डोर प्रत्येक नर नारी को इन्हीं खूबियों से बांध कर रखती है तब यह समाज आदर्श और एक परिवार की भावना के साथ बढ़ता है, सजता है। यही हमारे भारत की संस्कृति और सयता का पैमाना है। दुनिया भर के लोग इसी कारण से भारत की कल्चर को पसंद ही नहीं बल्कि अपनाने की कोशिस करते हैं। वर्तमान दौर में सदगुणों का बंधन ढीला हो गया जिससे मानवीय सयता छिन्न भिन्न हो गयी है। अपने पराये हो गये है। भाई-बहन का सबन्ध दूषित होने की राह पर चल पड़ा है। अपने घर में भी कई बार असुरक्षा की भावना पनपने लगी है। हालात तो यह है कि समाज में मानसिक विक्षिप्तता को दर्शाने वाली घटनाओं में 90 प्रतिशत अपने ही जानकार होते हैं। यह क्यों हो रहा है इसके लिए हमें ज्यादा दूर देखने की नहीं बल्कि अपने उस छिपे सत्य को जानने की जरुरत है। जिससे यह दीवार पुनः मजबूती को पा सके। अगस्त महीना रक्षाबन्धन का है। जिसमें इन्हीं रिश्तों को मजबूत करने के लिए धागे बांधकर बहनें अपने भाईयों से संकल्प कराती है कि वह अपनी बहन की रक्षा तो करे ही परन्तु साथ में दूसरी बहनों के लिए भी अपने संकल्पों को शुद्ध और पवित्र रखे और उसकी रक्षा करे। हमें अब केवल इसे एक परंपरा के रुप में नहीं बल्कि वास्तविकता के तौर पर मनाना है। परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर यही संदेश दे रहे है कि यह दुनियां आसुरीयता में डूब चुकी है। इससे निकलने, अपने मानवीय वजूद को बचाने और पुनः स्थापित करने के लिए पवित्र संकल्पों के साथ रक्षाबन्धन मनाये फिर स्वतंत्रता दिवस सही मायने में सार्थक होगा।

बोध कथा/जीवन की सीख

जैसी करनी,वैसा फल

[औलाद न होने से बुढ़ापे में भी काम करना पड़ रहा है। ये सुनकर उसकी पत्नी को आंसू आ गए।]

एक बुजुर्ग आदमी स्टेशन पर गाड़ी में चाय बेचता है। गाड़ी में चाय बेच कर वो अपनी झोपड़ी में चला गया। झोपड़ी में जा कर अपनी पत्नी से कहा कि दूसरी ट्रेन आने से पहले एक केतली चाय और बना दो। दोनों बहुत बुजुर्ग है। आदमी बोला कि काश! हमारी कोई औलाद होती, तो वो हमें इस बुढ़ापे में कमा कर खिलाती। औलाद न होने से बुढ़ापे में भी काम करना पड़ रहा है। ये बात सुनकर उसकी पत्नी की आँखों में आँसू आ गए। उसने चाय की केतली भर कर अपने पति को दे दी। बुजुर्ग केतली लेकर वापिस स्टेशन पर गया। वहाँ प्लेटफॉर्म पर एक बुजुर्ग दंपती को सुबह से शाम तक बेंच पर बैठे देखा। वो दोनों किसी भी गाड़ी में नही चढ़ रहे थे। तब वो चाय वाला बुजुर्ग उन दोनों के पास गया और उनसे पूछने लगा कि आपको कौन सी गाड़ी से जाना है? मैं आप को बता दूंगा की आप की गाड़ी कब और कहां आएगी? तब वो बुजुर्ग दंपति बोले कि हमें कहीं नही जाना है। हमें हमारे छोटे बेटे ने यहां एक चिट्ठी दे कर भेजा है और कहा है कि हमारा बड़ा बेटा हमें लेने स्टेशन आएगा और अगर बड़ा बेटा न पहुंचे तो इस चिट्ठी में जो पता है वहां आप पहुंच जाना। हमें तो पढ़ना-लिखना आता नही है आप हमें बस ये चिट्ठी पढ़ कर ये बता दो कि यह पता कहां का है, ताकि हम लोग अपने बड़े बेटे के पास पहुंच जाए। चाय वाले ने जब वो चिट्ठी पढ़ी तो वो वहीं जमीन पर गिर पड़ा। उस चिट्ठी में लिखा था कि - ये मेरे माता-पिता है जो इस चिट्ठी को पढ़े वो इन्हें पास के किसी वृद्धाश्रम में छोड़ आए। चाय वाले ने सोचा था कि - इस बुजुर्ग दंपति के दो बेटे हैं पर कोई भी बेटा इनको रखने को तैयार नही है। सुख या दुःख औलाद से नहीं मिलता। सुख दुःख तो अपने कर्मों के अनुसार मिलता है। न कोई औलाद सुख देती है ना कोई औलाद दुःख देती है।

संदेशः अगर आप के कर्म अच्छे हैं तो आप अकेले बैठे भी खुश रह सकते हो और अगर आप के कर्म बुरे हैं तो आप राजगद्दी पर बैठ कर भी दुःखी रहोगे।

समाज का हर वर्ग ब्रह्माकुमारीज़ को समर्थन करे

मेरी कलम से...

सुमित्रा महाजन
पूर्व लोकसभा स्पीकर

- देश की स्वतंत्रता अखंडता के लिए देश के कई परिवार ने अपना जान-बलिदान दिया...

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और उनसे जुड़े लोगों को धन्यवाद कहना चाहती हूं कि वे सब देश को स्वर्ग बनाना चाहते हैं। भारत 1947 में आजाद होकर आजादी के अमृत महोत्सव मना रहा है। देश की स्वतंत्रता अखंडता के लिए देश के कई परिवार ने अपना जान-बलिदान दिया। इन संघर्ष और बलिदान को याद करते हुए भारत को श्रेष्ठ बनाने में हम किस प्रकार योगदान दे सकते हैं देना चाहिए। स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ पर इन सब बातों को सोचना है। हमारे प्रधानमंत्री श्रेष्ठ भारत, एक भारत की कल्पना करते हैं। उनके अनुसार नए-नए आयाम देश में जोड़े जा रहे हैं। चाहे किसान हो, चाहे उद्योगपति हो, महिला हो, चाहे युवा हो सबके कल्याण अर्थ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान अपना श्रेष्ठ कार्य कर रही है। अब नए स्वर्णिम युग को प्रारंभ करने के लिए हम सब ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के साथ संलग्न हैं। साथ ही इस संस्थान के साथ हम सब भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में श्रेष्ठ चरित्रवान मनुष्य का चयन कर परमात्मा पूरे दुनिया में भारत को स्थापित करने जा रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा धार्मिक और समाजिक क्षेत्रों में अनेक विश्वव्यापी कार्य किया जा रहा है।

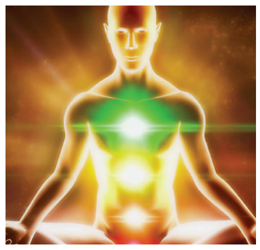

> “दुनिया पर पश्चिमी सभ्यता संस्कृति हावी होती जा रही है और भारतीय संस्कृति का समय के साथ निरंतर ह्रास होता चला आया उसको फिर से स्थापित करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ लगातार प्रयासरत है।”

जिस प्रकार से पूरी दुनिया पर पश्चिमी सभ्यता संस्कृति हावी होती जा रही है और भारतीय संस्कृति का समय के साथ निरंतर ह्रास होता चला आया, उसको फिर से स्थापित करने के लिए यह संस्थान लगातार प्रयासरत है। जिसकी सराहना जितनी की जाए उतनी कम है। समाज के हर वर्ग को आगे आकर इस संस्थान को समर्थन करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज में जो भी गुरु के रूप में हैं वे संसार को उत्तम शिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं जो ज्ञान समाज के कल्याण अर्थ भारत के उत्थान के लिए है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय बहुत अच्छी तरह से विश्व में काम कर रहा है। जिसके लिए संस्थान को बधाई के साथ धन्यवाद देती हूं कि अपने मकसद में जल्द से जल्द कामयाब होकर समाज में शांति स्थापित करेगी।

आत्मिक कल्याणकारी स्थिति द्वारा श्रेष्ठ जीवन की उपलब्धि

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 49

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल
ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

जीवन में चिंतनशील प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान एवं तत्व मीमांसा की गहन उपलब्धि मानवीय चित्त को एकाग्र करते हुए आत्म दर्शन की अनुभूतिगत स्थिति से सम्बद्ध कर देती है जिसमें परमात्म सत्ता की स्वीकारोक्ति सहज हो जाती है। उत्कृष्टता की आकांशा मानवीय प्रवृति का प्रभावशाली पक्ष है जो सदा व्यक्तिगत अभिप्रेरणा का कारक बनता है जिससे जीवन में उच्चतम अवस्था के निर्माण हेतु आत्मिक योगदान का निर्धारण सुनिश्चित होता है। आत्म चेतना का परिष्कार जब आध्यात्मिक पुरुषार्थ का मूलभूत आधार बन जाता है तब आत्मिक शक्तियों का प्रादुर्भाव चहुँ दिशाओं में चेतनता के रूप में व्याप्त हो जाता है। उत्कृष्ट अवस्था के निर्माण में आत्म तत्व के शक्तिशाली एवं व्यावहारिक साधन का विश्लेषण-चेतन, अवचेतन एवं अचेतन मन के संदर्भ और प्रसंग में करते हुए व्यक्तिगत स्तर पर जीवन लक्ष्य के साथ उमंग-उत्साह व जीवन दर्शन की प्राप्ति सुनिश्चित हो जाती है। परिष्कृत आत्म चिंतन की क्रियाशीलता द्वारा उत्कृष्ट अवस्था की प्राप्ति का प्रमाण-सकारात्मक, समर्थ एवं महान चिंतन के प्रति अंतर्मन की गहरी श्रद्धा है जो चेतना को-श्रेष्ठ, शुभ एवं पवित्र विचारों का महत्वपूर्ण स्त्रोत बना देती है।

चिंतन के परिष्कार से उत्कृष्टता की प्राप्तिः आत्म शक्ति के गूढ़तम रहस्य जब उजागर होते हैं तब वैज्ञानिक सत्यता के आधारभूत पक्ष यह स्वीकार करते हैं कि मस्तिष्क की वैचारिक सक्षमता एवं हृदय की भावनात्मक संवेदना के परिदृश्य में आत्मिक ऊर्जा का महत्वपूर्ण योगदान सन्निहित है। चिंतन के परिष्कार से ही चित्त में उत्कृष्टता की गहन अनुभूति सुनिश्चित होती है। जिसमें ऊर्ध्वगामी चिंतन की गतिशीलता व्यावहारिक परिवेश की उपलब्धिपूर्ण प्राप्तियों के स्वरूप में परिलक्षित होती है। उत्कृष्टता की वास्तविक संकल्पना का आभामंडल, मानवीय चरित्र के गठन को सुव्यवस्थित स्थिति में ढालकर जब संकल्पबद्धता की अवस्था में रूपांतरित होता है तब चिंतन के परिष्कार की निरंतरता, निष्कर्ष रूप से उत्कृष्ट परिणाम में परिवर्तित हो जाती है। जीवन को देव तुल्य बनाने में सिद्ध स्वरूप निपुण आत्माएं चिंतन के परिष्कार द्वारा ही मंसा से निराकारी, वाचा से निरहंकारी तथा कर्मणा से निर्विकारी बनकर स्वयं को सदा पवित्र चिंतन से संपन्न रखती हैं। उज्जवल व्यक्तित्व की प्रतिष्ठापूर्ण स्थापना हेतु किए गए सम्पूर्ण पुरुषार्थ में भागीरथ प्रयास और उससे सम्बद्ध जीवंत अनुभूति के अंतर्गत अंततः मानव को गौरवपूर्ण उत्कृष्टता की सुनिश्चितता, परिष्कृत चिंतन के प्रेरणादायी स्वरूप से ही प्राप्त होती है।

उत्कृष्टता की प्रेरणात्मक उपलब्धि हेतु परिष्कृत चिंतनःसामाजिक परिदृश्य में लोक व्यवहार के अंतर्गत सर्वाधिक महत्व उत्कृष्टता का है, जिसमें वृहद् अपेक्षा के साथ आशा एवं विश्वास की अभिव्यक्ति अर्थात् निकट भविष्य में उत्कृष्टता के मानदंड के अनुरूप ही प्रस्तुतीकरण को यथासंभव उच्च स्वरूप में निर्मित करने हेतु रहती है। उत्कृष्टता की प्रेरणात्मक उपलब्धि के प्रति श्रद्धा एवं आस्था बनाए रखकर अंतर्मन में गहरी मान्यता का विकास हो जाना, परिष्कृत चिंतन द्वारा ही संभव है। जिसमें सम्पूर्ण पुरुषार्थ की परिणिति उत्कृष्टता की प्राप्ति में सन्निहित होती है।

जीवन का गुणात्मक पक्ष व्यक्ति को सदा अभिप्रेरित करता है कि मन, वचन एवं कर्म की व्यावहारिक पृष्ठभूमि में साम्य स्थापित करते हुए गतिशील बने रहना है, ताकि चिंतन के परिष्कृत स्वरूप का सदुपयोग आत्मिक उत्थान एवं उद्धार हेतु सुनिश्चित किया जा सके। आत्म जगत के भीतर सम्पूर्ण गुण एवं शक्ति से उच्चतम स्थितियों के कारण और परिणाम की निरंतर खोज द्वारा यह निश्चित होता है कि मनुष्य, उत्कृष्टता पर आस्थापूर्ण व्यवहार जीवन के वास्तविक स्वरूप में पूर्णतया परिवर्तित कर सकता है। उच्चतम स्थिति के प्रति नैसर्गिक आकर्षण व्यक्तित्व की धरोहर है, जिसमें आंतरिक उत्कंठा से युक्त भावनाएं परिष्कृत चिंतन द्वारा अभिव्यक्त होती हैं जो व्यक्ति को उत्कृष्टता के उच्चतम स्वरूप में स्थापित कर देती हैं।

> “जीवन में जब एक बार निर्णय कर लो और आगे बढ़ो, फिर इतिहास रचने से आपको कोई नहीं रोक सकता।”

\- बाला साहेब ठाकरे, राष्ट्रवादी नेता

> “अपने आप को खोजने और पाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप अपने आप को दूसरों की सेवा और समर्पण में खो दें।”

इंदिरा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत

शख्सियत | दिल्ली की समाजसेवी बीके अन्नू ने सांझा किए जीवन के अनुभव

परमात्मा व ड्रॉमा पर निश्चय के सिद्धांत ने मेरी जिंदगी की दिशा बदल दी

जीवन को सुखद जीने के लिए पहले खुद में फिर हमें परमात्मा में अटूट विश्वास होनी चाहिए। इतना विश्वास कि किसी रिश्तेदार औलाद पर हम करते हैं। जिस रूप और रिश्ते में हम जब भगवान को याद करते हैं उस रिश्ते को निभाने के लिए परमात्मा हमसे बंधा होता है। वो हमारी मदद के लिए हमेशा तत्पर रहता है। हम एक बार संपूर्ण विश्वास के साथ भगवान को यूज करना तो सीख जाएं जिसे मेडिटेशन के रूप में समाजसेवी बीके अन्नू ने अपनाया। उनका विशेष अनुभव आगे वर्णित है...

मैं ब्रह्माकुमारीज़ के साथ 11 साल से जुड़ी हूं। जैसे हर कोई भगवान के पास शान्ति ढूंढने आता हैं, वैसे मैं भी आई थी और यहां पर शांति के साथ-साथ ज्ञान, शक्तियां, गुण सबकुछ मिलता चला गया। शुरू में तो परमात्मा का ज्ञान समझ नहीं आता था। धीरे-धीरे समझ आना शुरू हुआ। तीन साल बाद मुझे मुरली समझ आनी शुरू हुई। उससे पहले मुझे ऐसा लगता था जैसा कोई मुझे लोरी सुना रहा है और मैं रिलेक्स होके सुनती चली जाती थी। उसके बाद जब मैंने खुद पढ़ना शुरू किया तब लगा ये परमात्मा का ज्ञान है। इस ज्ञान से ही मेरी उन्नति है। मैंने कभी मुरली मिस नहीं की। उसके एक साल बाद मुझे अमृतवेला का महत्व समझ आया कि अगर अपना पिछला पाप हिसाब-किताब चुकतू करने हैं तो अमृतवेला उठ योग करना ही पड़ेगा। समझ में आया कि सब कुछ हमारे हाथ में ही है हम अपने नेगेटिव को पॉजिटीव में खुद बदल सकते हैं। हमें परमात्मा को बिलेम करने की जरूरत नहीं है।

बच्चों को रंगोली बनाने के साथ ड्रॉइंग क्लास शुरू की

मैंने कुछ समाज में देखा कि बहुत सारे गरीब छोटे बच्चे जिनकी माताएं पढ़ी-लिखी नहीं हैं परंतु उनके अंदर बहुत उमंग-उत्साह है अपने बच्चों को पढ़ाने की। तब उन्हें देखकर मैंने उन्हें मदद करने की सोची। शुरू में हमने कुछ बच्चों का दाखिला नजदीक के प्राईवेट स्कूल में करवाया। उसके बाद अपने दोस्तों से मिलकर उन लोगों को हमने बताया कि जितना पैसे का एक दिन में हम लोग बाहर खा पीकर उड़ा देते हैं उतना में बच्चों का एक महीने का फीस देकर पुण्य कमाया जा सकता है। इस बात से मेरे बहुत मित्र राजी हो गए। उसमें से कुछ मित्र हमारे बाहर के देशों में रहते हैं। आज मेरे पास 14 बच्चे हैं। जिनको मैं खुद भी पढ़ाती हूं और उनके स्कूल पेरेंट्स टीचर मीटिंग में भी जाती हूं। उनके रिपोर्ट कार्ड देखती हूं। बच्चों को रंगोली, ड्रॉइंग बनाने के साथ मेडिटेशन क्लास शुरू की है।

वृद्धाश्रम में भी जा रही हूं

बच्चे छोटे हैं मुरली समझ नहीं आती है परंतु कभी-कभी अच्छा वरदान उनको समझाती हूं कि देखो आज बाबा ने गिफ्ट भेजा है हम दोनों के लिए तो कोई बात उनको समझ आती है कोई नहीं। उसमें से एक बच्चा जो भगवान के लिए बहुत प्रश्न पूछता है। मैं उसको बोलती हूं एक दिन तेरा भी निश्चय वही होगा जो मेरा है। मैंने दो चीजें- **सीखी हैं निश्चिय परमात्मा पर और ड्रामा पर।** ये दो चीजें मेरे जिंदगीं में बहुत बदलाव लाईं। मैं आठ साल से एक वृद्धाश्रम में भी जा रही हूं। कुछ वृद्ध हैं उनके घर वाले सड़क पर छोड़ गया, कोई स्टेशन पर छोड़कर चला गया। वृद्ध इंतजार करते रहे हैं कि उनका बेटा टिकट लेने गया है अभी आएगा। इस टाइम 22 वृद्ध हैं उनमें से कुछ मेंटली हैं, रिटायर्ड हैं, दो बेड पर हैं। तो हम उनकी दवाइयां और भोजन का ध्यान रखती हूं। सभी ने मुझे हंसी-मजाक से ब्रेकफास्ट आंटी नाम रखा है। मैं उनसे पूछती कि आज आप क्या खाएंगे? तो कभी-कभी वो हंस के बोलते हैं ब्रेकफास्ट आंटी हमारे को आप गोलगप्पे खिलाओ, जूस पिलायें। तब मैं उन लोगों के पास जूस वाले को भेजती हूं। कुछ गरीब महिलाएं है जिनको ताकत की दवाई की जरूरत होती है, हम उन्हें इंजेक्शन लगवाते हैं। अच्छी खुराक देने की कोशिश करते हैं।

> मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि आज भारत की आबादी लगभग 130 करोड़ है फिर भी अनाज सहित कई मामले में भारत आत्मनिर्भर है।

बाबा को कभी बेटी तो कभी अपना बच्चा भी बना लेती हूं

अगर मैं कोई सेवा में खुद को असमर्थ पाती हूं तो रात में सोने से पहले परमात्मा पिता के आगे अर्जी डाल कर सोती हूं कि बाबा आप के बच्चे मुझसे इस बात की उम्मीद कर रहे हैं। आप किसी को निमित्त बना कर मेरे पास भेजो नहीं तो मेरी ही क्षमता बढ़ा दो। बस बाबा अपने आप ही एक दो दिन में उसका हल कर देता है। बाबा मुझे टच करता है कि तुम्हारी वहां-वहां जरूरत है। मेरा बाबा बैठा है, हर काम करने के लिए। कोई ऐसी बात होती है मैं किसी उलझन में आती हूं तब बाबा को पत्र लिख देती हूं, तब बाबा मुरली में उसका जवाब दे देता है। अपने बाबा के ऊपर मुझे इतना निश्चय है कि बाबा को कभी बेटी, तो कभी अपना बच्चा भी बना लेती हूं।

अभी थोड़ी दिन पहले मैं बहुत बीमार हो गई थी, बहुत टेस्ट कराए, कुछ भी नहीं निकला और मेरा बुखार नहीं उतर रहा था। मैं कभी अपने जीवन काल में इतना बीमार नहीं हुई थी। 17 दिन से बेड पर मेरे अंदर कोई ताकत नहीं रही थी, मेरे घर वाले भी घबरा गए। फिर एक बाबा से कहा कि बाबा या तो इसे सहन करने की शक्ति बढ़ा दो। नहीं तो कल सुबह इस काटे को भी निकाल देना। मैं बाबा के साथ लड़ाई कर रही थी कि तू मुझे 2:20 पर बुखार चढ़ाता है और तीन बजे उतार देता है। तुझे पता है कि मुझे तीन बजे मेडिटेशन में बैठना है और मेरे से बैठा नहीं जा रहा पर तू तो इतना अच्छा है लेटे हुए भी मेरा अमृतवेला स्वीकार कर लिया परंतु बाबा बस अब नहीं। अगले दिन मुझे बुखार ही नहीं चढ़ा। मेरे सारे डॉक्टर हैरान थे। ऐसे ही एक दिन मैं बहुत दर्द में थी। मैंने बोला बाबा मेरे तो बच्चे बाहर रहते हैं विदेश में वो तो आ नहीं सकते तो मेरे पति मेरे साथ थे बोले आधी रात को किसके साथ इतनी बातें कर रही हो? मैंने बोला आप सो जाइये मैं बाबा से बात कर रही हूं। मैं धीरे-धीरे बात कर रही थी बाबा आज मुझे बहुत दर्द है तो मुझे थोड़ी देर बाद लगा बाबा ने बोला बैठ जाओ ना और मेरी टागें दबनी शुरू हो गई। मेरे से उठ के पानी भी नहीं पिया जा रहा फिर थोड़ी देर बाद बाबा ने मुझे उठाया मुझे ऐसे लगा कि कहीं दर्द नहीं है। मैंने मेडिटेशन का प्रयोग कर यौगिक बागवानी भी है। जिसमें हमने सुंदर बगीचा लगाकर पेड़-पौधों की सेवा भी करती हूं। मैं पेड़-पौधों को भी शुद्ध वाईब्रेशन के साथ स्नेह प्यार देती हूं।

खबर, एक नज़र

कल्पतरूहः फॉर्म हाऊस में रोपे पौधे

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर/छग। कल्पतरूह प्रोजेक्ट के अन्तर्गत सरगुजा केशरवानी समाज के अध्यक्ष एवं उन्नतशील किसान ताराचन्द्र गुप्ता के करजी ग्राम में स्थित फॉर्म हाउस में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम में राकेश गुप्ता, सरगुजा जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं उनका पूरा परिवार जगन्नाथ गुप्ता, विनोद गुप्ता, रमा गुप्ता, सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्रह्माकुमारी विद्या दीदी, ब्रह्माकुमारी बहनें और संस्था से जुड़े भाई-बहनों द्वारा 20 खजूर के पौधे लगाए गए। इस अवसर पर ताराचन्द्र गुप्ता ने कहा कि मेरा बचपन से ही प्रकृति के प्रति रूझान था। इसी कारण फॉर्म हाउस तैयार किया, जिसमें नए-नए रिसर्च द्वारा विभिन्न प्रकार के फलदायक वृक्ष लगाए हैं, जिससे पर्यावरण स्वस्थ और सुरक्षित रहे।

मानव कल्याण के लिए बीके कुलदीप सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट से सम्मानित

शिव आमंत्रण, हैदराबाद। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके कुलदीप को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी संतोष दीदी ने प्रदान किया। बीके कुलदीप दीदी द्वारा लॉकडाउन में मानवता के कल्याण के लिए की गईं सेवाओं और लाखों लोगों को मानसिक रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रदान किया गया है। इस अवसर पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. दीपक हरके भी उपस्थित थे।

संगीत कलाकारों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, जयपुर राजस्थान। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के राजापार्क, जयपुर सेवाकेंद्र पर 'संगीत के साथ परमात्मा मिलन विषय पर संगीत संध्या का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता जयपुर सब जॉन इंचार्ज पूनम दीदी ने बताया कि कैसे हम संगीत के माध्यम से परमात्मा की स्मृति में, उसके प्यार का अनुभव कर सकते हैं। कार्यक्रम में मुंबई और राजस्थान के कलाकार सुखीराम मंडा एवं (चुन्नी जयपुरी) मोहम्मद बेगम, पिंक सिटी म्यूजिक अकेडमी द्वारा प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में राजस्थान बीजेपी अध्यक्ष भंवरलाल भाटी, ऑल इंडिया जर्नलिस्ट महामंत्री दीपक, पार्षद स्वाति परनामी, ब्रांच हेड आदित्य बिरला, सन लाइफ इंश्योरेंस मुकेश बागड़ी, असिस्टेंट प्रोफेसर एंड एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर सुधीर वर्मा एवं शहर के अन्य गणमान्य अतिथि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सुखीराम मंडा एवं चुन्नी जयपुरी महम्मुद बेगम जी ने संगीत की बहुत सुंदर प्रस्तुति दी। अतिथियों का शॉल एवं पौधे देकर सम्मान किया। साथ ही सभी कलाकारों का भी सम्मान किया गया।

कल्पतरुह अभियान केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने ओआरसी में किया पौधारोपण

करुणा-दया का भाव ही प्रकृति से प्रेम सिखाता है

आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत कार्यक्रम का आयोजन

अभियान का शुभारंभ करते केंद्रीय मंत्री यादव, बीके आशा व ब्रह्माकुमारीज़ के पीआरओ बीके कोमल।

गुरुग्राम (ओआरसी) हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में कल्पतरुह अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अथिति के रूप में केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु मंत्री भूपेंद्र यादव शामिल हुए। उन्होंने कहा कि जो प्रकृति की रक्षा करता है, प्रकृति उसकी रक्षा करती है। आध्यात्मिक जीवन शैली से ही हम प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापन कर सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। भारत ऊर्जा के क्षेत्र में इको फ्रेंडली अनुसंधान कर रहा है। पौधारोपण द्वारा भूमि कटाव को भी रोका जा सकता है। करुणा और दया का भाव ही प्रकृति के साथ प्रेम करना सिखाता है। मन को नियंत्रित करना ही सच्चा अनुशासन है। ब्रह्माकुमारी संस्था सतोगुण जागृत करने का कार्य कर रही है। जिसके द्वारा ही धरती पर स्वर्णिम दुनिया की संकल्पना की जा सकती है। योग एक जीवन पद्धति है।

ओआरसी की निदेशिका आशा दीदी ने कहा कि प्रकृति से प्रेम ही जीवन को सुखद बनाता है। जीवन बनाए रखने के लिए प्रकृति का संतुलन जरूरी है। संस्था के मुख्यालय माउंट आबू से आए बीके शांतनु ने कल्प तरूह अभियान के बारे में बताय।

मधुबन न्यूज के संपादक बीके कोमल ने कहा कि पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए मानसिक स्वच्छता की आवश्यकता है। हमारे विचार ही पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। पौधा लगाने के साथ-साथ मन में एक शुद्ध संकल्प का भी पौधा लगाएं।

योग का मतलब है आत्मा का संबंध परमात्मा से जोड़ना

» **शिव आमंत्रण, गया/बिहार।** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सिविल लाइन सेवाकेन्द्र द्वारा गांधी मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एडवोकेट अलखदेव सिंह ने कहा कि योग ही आरोग्य एवं सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी है जो सारे मानवजाति के लिए है। योग मन व शरीर, विचार व कर्म, समय व उपलब्धि की एकात्मकता का मानव व प्रकृति के बीच सामंजस्य का मूर्त रूप है। पतंजलि योगा टीचर दम्यंती देवी ने कहा योग का अर्थ 'जोड़ना अथवा मिलाप आध्यात्मिक चर्चा में योग शब्द का भावार्थ आत्मा का परमात्मा से संबंध जोड़ना अथवा परमात्मा से मिलन मनाना है। सेवाकेन्द्र संचालिका बीके शीला ने कहा राजयोग द्वारा मनुष्य का मानसिक तनाव दूर होता है, मन को शांति मिलती है और मस्तिष्क- शरीर को भी आराम मिलता है।

शहर के डॉक्टरों का ब्रह्माकुमारीज़ ने किया सम्मान

» **शिव आमंत्रण, श्योपुर/मप्र।** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय श्योपुर द्वारा जिला चिकित्सालय में डॉक्टर्स का सम्मान समारोह सेवाकेंद्र प्रभारी बीके तारा के नेतृत्व में आयोजित किया गया। इस दौरान सभी डॉक्टर्स को लक्ष्मी-नारायण के चित्र तथा आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया गया। कार्यक्रम में सिविल सर्जन आरबी गोयल, पूर्व सिविल सर्जन डॉ. तिवारी, डॉ. विष्णु गर्ग, डॉ. हरीश साक्य, मनोचिकित्सक डॉ.गायत्री, डॉ.करोरिया, डॉ. हरीश शाह, डॉ.राजेश शाह, डॉ.ललित शर्मा, डॉ.प्रवीण शर्मा, डॉ.राहुल तोमर, डॉ. मंगल, डॉ. सिकरवार, डॉ. योगेश रावत के साथ अन्य डॉक्टर भी उपस्थित रहे। डॉक्टर्स को संबोधित करते हुए बी.के. तारा बहन ने सभी को मेडिटेशन भी कराया। डॉ. गोयल ने अपना अनुभव सुनाया। डॉ. गायत्री ने भी अन्य डॉक्टरों के प्रति आभार व्यक्त किया।

किशोरदास देव जू महाराज को स्मृति चिह्न भेंट किया

» **शिव आमंत्रण, सागर/मप्र।** ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सागर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया ने नगर में चल रही भागवत कथा के दौरान वृंदावन से पधारे कथावाचक स्वामी किशोरदास देव जू महाराज से भेंटकर उन्हें स्मृति चिह्न प्रदान किया। इस दौरान महाराजजी को माउंट आबू पधारने का निमंत्रण भी दिया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन पर चर्चा की। इस मौके पर बीके पार्वती, बीके मुकेश, बीके सुनील भी मौजूद रहे।

एक पौधा प्रेम, शक्ति, आनंद का...

मंडी बामोरा/बीना (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर कल्पतरुह अभियान का शुभारंभ संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती की 57वीं पुण्यतिथि पर किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जानकी ने बताया कि कल्पतरुह पौधारोपण महाअभियान के माध्यम से भाई-बहनें सहभागी बनेंगे और सभी 75 दिन तक एक-एक पौधा रोज लगाएंगे। इन पौधों को प्रेम, शक्ति, आनंद जैसे दिव्य नाम भी दिए जा रहे हैं। बीना से पधारीं बीके सरोज, स्टेट बैंक के मैनेजर महेंद्र शर्मा, समाजसेवी अशोक जैन, समाजसेवी सुनील गुप्ता, बीके रिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

समस्तीपुर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

» **शिव आमंत्रण, समस्तीपुर/बिहार।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सेवाकेंद्र पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुख्य रूप से रोटरी क्लब के सिटी प्रेजिडेंट केशव किशोर प्रसाद, बीके सविता, अपर मंडल रेल प्रबंधक जेके सिंह, बीके कृष्ण ने अपने विचार रखे।

स्नेह मिलन सूरत से तीन बार सांसद जया बेन ठक्कर व अन्य भाजपा नेता पहुंचे सेवाकेंद्र

भगवान के घर से लेकर जाएं सफलता का वरदान

» **शिव आमंत्रण, सूरत/गुजरात।** सूरत अल्थान सेवाकेंद्र पर तीन बार से सांसद जया बेन ठक्कर पहुंचीं। जो बीजेपी की पूर्व राष्ट्रीय उपाध्याक्ष भी रह चुकी हैं। कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी की जो शिक्षाएं हैं वह जीवन में बहुत ही जरूरी हैं उन्होंने अपने साथ आए हुए सभी अल्थान भटार के कॉरपोरेटर को कहा कि आप भी एक बार जरूर ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग मेडीटेशन कोर्स करें। हेमेंद्रकुमार भाई बोरसलीवाला, वकील समाज सेवक बीजेपी के वाइस प्रेसिडेंट सूरत, रसिक भाई पटेल मजूरा विधानसभा के इंचार्ज गुजरात प्रदेश किसान मोर्चा जिला कार्यभारी, शीलाबेन बीजेपी महिला मोर्चा मण्डल की प्रेसीडेंट और समाज सेवक, हिमांशु भाई (कॉर्पोरेटर और समाज सेवक) सभी ने कहा कि हमें ब्रह्माकुमारीज़ में आकर बहुत ही अच्छा लगा। संस्था हमें आध्यात्म सिखाती है। हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। बिल्डर रेवाभाई भरवाड ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बीके लक्ष्मी बहन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आप भगवान के घर से सफलता का वरदान लेकर जाएं। भगवान जिनके साथ होता है उनको हमेशा सफलता मिलती हैं। संचालन करते हुए बीके क्रांति बेन ने कहा कि हमें जीवन में अगर सफल होना है तो राजयोग, आध्यात्म जरूरी है। हम अपने जीवन को परिवर्तन कर अपने घर परिवार, समाज को सुखमय बना सकते हैं।

ओआरसी केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान पहुंचे ब्रह्माकुमारीज़

स्वर्णिम विश्व के निर्माण में करुणा-दया का भाव जरूरी है: राज्यपाल

» शिव आमंत्रण, गुरुग्राम/ हरियाणा। करुणा और दया की प्रेरणा देते हुए ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में करुणा और दया वर्ष के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए करुणा और दया विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि यहां पर बिताए हुए पलों को शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करना बहुत मुश्किल है। आध्यात्मिक ऊर्जा और शांति के प्रकंपन मन को शक्तिशाली बना देते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि स्वर्णिम विश्व के निर्माण में करुणा और दया का भाव जरूरी है। कोई भी इंसान बगैर प्रेम के नहीं रह सकता लेकिन वही प्रेम जब योग के माध्यम से परमात्मा से जुड़ जाता है तो करुणा और दया का संचार होता है। जरूरत है तो सिर्फ अपने आदर्शों के प्रति वफादारी की। राज्यपाल ने कहा कि भारत हमेशा से ही ज्ञान और प्रज्ञा का केंद्र रहा है। भारत ने सर्व धर्म समभाव की धारणा को अपनाया है। सबको शरण दी है। भारत की संस्कृति 5000 वर्ष पुरानी है। भारत ने ही विश्व को आदर्शों और मूल्यों का ज्ञान दिया। इंसान सामूहिक रूप से रहता है। हमारे शास्त्रों में विश्व को एक परिवार माना गया है। इन सबका आधार वास्तव में आत्मिक भाव है। ब्रह्माकुमारीज सही अर्थों में आज वही कार्य कर रही हैं। मानवता को आत्मिक बोध करा रही हैं। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने अपने वक्तव्य में कहा कि भगवान ने सुख की सृष्टि रची थी। आज अपने कर्मों से मानव ने इसे दुःख की सृष्टि बना दिया। अति के बाद ही फिर से अंत होता है। पुनः परमात्मा आध्यात्मिक ज्ञान से सृष्टि को नया बनाते हैं। राजयोग के अभ्यास से ही जीवन में करुणा और दया का संचार होता है। दुःख का असली कारण जीवन में पांच विकारों का प्रभाव है। आध्यात्मिक ज्ञान से ही हम इन बुराईयों से मुक्त हो सकते हैं। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी आशा दीदी ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि करुणा और दया जैसे मूलभूत गुणों की जागृति से ही मानव, मानव से जुड़ सकता है।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए राज्यपाल आरिफ मोहम्मद, बीके आशा दीदी, बीके बृजमोहन, बीके चक्रधारी दीदी, बीएमएल मुंजाल विश्व विद्यालय के कुलपति मनोज के अरोड़ा, जीडी गोयंका विश्व विद्यालय के कुलपति एवं डॉ. तबरेज अहमद व अन्य।

ब्रह्माकुमारीज़ में किया जाता है मन का इलाज: बीके पूनम

» शिव आमंत्रण, शाजापुर/मप्र। नेशनल डॉक्टर्स डे पर ब्रह्माकुमारीज़ के शिव वरदानी धाम हरायपुरा शाजापुर में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय के अंतर्गत संपन्न हुआ। मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमारी पूनम बहन ने कहा कि आप जिस्मानी डॉक्टर हैं जो शरीरों का इलाज करते हैं और राजयोग के माध्यम से ब्रह्माकुमारी संस्थान एक प्रकार से रूहानी हॉस्पिटल है। आप तन का इलाज करते हैं एवं यहां मन का इलाज किया जाता है आज जो मनुष्य के अंदर मूल्यों की कमी आ गई है जिसके कारण व व्यर्थ चिंतन के कारण बैचेन रहने लगा है, वह तनावग्रस्त हो गया है। यहां पर आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से उसमें रूहानी बल एवं आत्मबल को बढ़ाया जाता है उसमें मूल्यों का संचार किया जाता है क्योंकि कहा जाता है कि मन चंगा तो कसौटी में गंगा. और मन को तंदुरुस्त रखने के लिए राजयोग की सभी को बहुत आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान के सदस्य डॉ. अंबावतिया, ब्रह्माकुमारी चंदा बहन, ब्रह्माकुमार दीपक, डॉ.आर.एन. सोनी, डॉ.हावडिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आध्यात्मिकता से किसानों के जीवन में आएगी आत्म निर्भरता

» शिव आमंत्रण, जबलपुर/मप्र। आत्मिक शक्ति ही आत्म-निर्भरता की उड़ान का आधार। शुद्ध अन्न ही शुद्ध मन का निर्माण करता है और शुद्ध मन के द्वारा ही श्रेष्ठ सृजन की परिकल्पना साकार रूप ले सकती है। उपरोक्त उद्गार बीके भावना दीदी ने संस्था के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित 'आत्म निर्भर किसान अभियान' के अंतर्गत भंवरताल के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

केके अग्रवाल संभागीय अध्यक्ष भारत कृषक समाज ने कहा कि आज आवश्यकता है पुनः वैज्ञानिक पद्धति के साथ प्राचीन प्रयोगों के द्वारा कृषि कार्य मे परिवर्तन करने की तथा प्राचीन कृषि परंपरा को जीवित रखने की। डॉ.ब्रजेश अरजरिया बोर्ड मेम्बर एवम कृषि सलाहकार ने कहा कि आज हमे कृषि कार्य मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर उसके साधनों पर आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है। बीके वर्षा बहिन ने अभियान के बारे में बताया। बीके नरेश श्रीवास ने कविता का वाचन किया। बहन राहत, माही, भूमिका ने स्वागत नृत्य एवं आभार बीके सन्दीप ब्यौहार ने माना। संचालन बीके संतोष ने किया।

जीवन में वृक्षों के महत्व विषय पर नाटक किया प्रस्तुत

» शिव आमंत्रण, नरसिंहपुर/ मप्र। आज विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय प्रभु उपहार भवन करेली के भाई-बहनों द्वारा आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 75 पौधों का रोपण किया गया और एक घंटे संघटित राजयोग द्वारा परमपिता शिव से प्राप्त शक्तिशाली बाइब्रेशन पौधों को दिए। पौधों का पंजीयन ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा निर्मित मोबाइल ऐप 'कल्पतरु' पर किया साथ ही पौधे से वृक्ष बनने तक उसकी देखभाल और संभाल करने का संकल्प लिया। ब्रम्हाकुमारीज़ करेली की मुख्य प्रशाशिका राजयोगिनी सरोज दीदी जी ने कहा की पौधा रोपण तो सरल है और पूरे विश्व मे प्रतिबर्ष करोडो पौधे लगाये जाते हैं लेकिन देखभाल के अभाव मे अधिकतर बचपन मे ही दम तोड देते हैं लेकिन हम सभी एक संकल्प के साथ पौधा रोपण करें कि उनके बृक्ष बनने तक संभाल करेगे और नियमित राजयोग द्वारा पौधों को स्वस्थ रहने के शुभ बाइब्रेशन देते रहेंगे।

वाल कलाकारों ने हमारे जीवन में बृक्षो के महत्व विषय पर नाटक प्रस्तुत किया।

डॉक्टर्स डे: डॉक्टर्स का किया सम्मान

» शिव आमंत्रण, बाढ़/ बिहार। मनुष्य के जीवन में एक डॉक्टर की भूमिका को बताने की आवश्यकता नहीं है। हमारी संस्कृति में डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया जाता है और भगवान के महत्व को दर्शाने के लिए हर साल 1 जुलाई को नेशनल डॉक्टर्स डे के रूप में मनाया जाता है। यह खास दिन भारतीय चिकित्सा संघ (ढ्ढरू) द्वारा मनाया जाता हैं। कोविड19 के प्रकोप के दौरान महामारी का सामना करते सभी डॉक्टर का आज सम्मान किया गया इस कार्यक्रम में बाढ़ के प्रसिद्ध डॉ.बीपी सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया इस कार्यक्रम में डॉ.नरेश प्रसाद सिंह डॉ.अरुण शर्मा डॉ.सियाराम डॉ.अंजेश, एनटीपीसी डॉ.अरविंद, डॉक्टर सामंत डॉ.ज्योत्स्ना डॉ.अंकित एवं अन्य उपस्थित थे। मेडिकल विंग का एक्टिविटी के बारे बीके विपिन विस्तार से अवगत कराया और मेडिटेशन के द्वारा शांति की अनुभूति राजयोगिनी ज्योति दीदी ने कराया।

धरती का श्रृंगार हैं वृक्ष, जहां हम जीते हैं

» शिव आमंत्रण, इंदौर /मप्र। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सभी को वृक्ष का महत्व बतलाते हुए ब्रह्माकुमारी अन्नपूर्णा ने कहा कि हम सभी को मिलकर यह संकल्प लेना है कि एक व्यक्ति एक वृक्ष लगाकर एक विश्व बनाना है और धरती का श्रृंगार वृक्ष है तो हम धरती मां का एक एक वृक्ष लगाकर और उसे रोज पॉजिटिव पावर देकर उसकी अच्छी तरह से पालना करनी है। इसी के साथ उन्होंने कहा की दुनिया में प्रदूषण तो बहुत है परंतु सबसे पहले हमें अपने मन के नेगेटिव विचारों के प्रदूषण को परमात्मा शिव की याद में रहकर खत्म करना है तभी हम अपने मन के श्रेष्ठ संकल्प का बीज लगा सकेंगे और फिर प्रकृति व पशु पक्षी आदि को भी पॉजिटिव पावर देकर पालना कर सकेंगे। वृक्ष का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा वृक्ष हमें छाया देता है, ऋषि मुनि वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते हैं, वृक्ष ही हमें फल देता है ऑक्सीजन देता है तो क्यों नहीं हम उन्हें रोज कम से कम 5 मिनट समय देकर उनसे प्यार से बातें करें ।

ऐसी महान् आत्मा बनो जो हरेक का
सिर आपके आगे झुक जाये

परमात्मा कहते हैं- सुख दो, सुख लो, इसे सदा याद रखें

» शिव आमंत्रण, भिलाई/छग। नगर के सेक्टर 7 स्थित तालाब के मध्य में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में तन और मन को स्वस्थ रखने के संकल्प के साथ योग कर विश्व में शांति के प्रकम्पन प्रवाहित किए गए। राजयोग के प्रातः सत्र में भिलाई सेवा केन्द्रों की निदेशिका आशा दीदी ने कहा कि योग के नियमित अभ्यास से मन बुद्धि संस्कारों में हल्कापन आता है, तथा बुद्धि की निर्णय शक्ति बढ़ती है। योग द्वारा हमारे आंतरिक मन की स्थिति का प्रभाव प्रकृति एवं हमारे किए कर्मों पर पड़ता है7 योग के नियमित अभ्यास से हर कार्य सरल, सहज और संभव है। आपने पुण्य कर्मों के बारे में बताते हुए कहा कि पुण्य कर्म दिखावा नहीं बल्कि दिल से होता है आवश्यकता के समय किसी मनुष्यात्मा का सहयोगी बनना है। ना दुख दो, ना दुख लो, सुख दो, सुख लो यह परमात्म महावाक्य रूपी स्लोगन को अपने जीवन में धारण करे 7 दृढ़ धारणा की कमी और अटेंशन के परहेज से ही हमें तनाव होता है। बीके आशा बहन ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 40 वर्षों से भी अधिक मास के हर तीसरे रविवार को भारतीय समय अनुसार शाम 6.30 से 7.30 तक पूरे विश्व के सेवाकेंद्रो में एक संकल्प के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान से हम मूल्यों को विकसित कर सकते हैं: बीके मृत्युंजय

» शिव आमंत्रण, मुजफ्फरपुर/बिहार। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा वर्ष 2022 -2023 में आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा दया एवं प्रेम विकसित करने की योजना बनाई गई है। इस वर्ष के कार्यक्रमों के बिहार की सेवाओं का उद्घाटन करते हुए संस्थान के कार्यकारी सचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय ने कहा आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा मूल्यों को विकसित कर सकते हैं। राजयोग के अभ्यास से दया, प्रेम, करुणा इत्यादि मूल्यों का विकास होता है। इसके लिए मनोविकारों का त्याग करना होगा। यही मानव जीवन को संकट से मुक्त करने की विधि है। सफल जीवन के लिए उन्होंने अपने दैनिक जीवन में राजयोग मेडिटेशन को अपनाने का आवाहन किया। मुख्यालय माउंट आबू से पधारी शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय कोर्डिनेटर बीके सुमन बहन ने कहा अगर हम किसी के प्रति दया भाव,करुणा भाव रख करके मदद करते हैं तो हमारे जीवन में कभी खालीपन नहीं आएगा। जैसे कि मैं अकेली हूं...या मेरी मदद करने वाला कोई नहीं है...आदि। कहावत है-दे दान तो छूटे ग्रहण।दिए बिना हमारा खजाना कभी भरपूर नहीं होगा।हर प्राणी,हर इंसान के प्रति दया भाव, करुणा भाव रख करके मदद करते रहें और अपना जीवन सुखमय और शांतिमय अनुभव करते रहें।

राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री रामसूरत कुमार ने कहा कि जैसे मेले में हम अच्छी चीजें लेना पसंद करते हैं उसी तरह अपने जीवन में अच्छे गुण धारण करें। अगर मनुष्य में दया व करुणा नहीं है तो वह मनुष्य नहीं है। ब्रह्माकुमारी संस्थान समाज के सुधार में लगी है।संगत से गुण होता है। हम चाहेंगे ग्रामीण स्तर पर सेवा कार्य का लाभ सभी को मिले। संचालन बीके कंचन बहन एवं आभार ज्ञापन बीके मुकुटमणि बहन ने किया। इसके पूर्व कार्यक्रम में वैशाली सांसद वीणा देवी, शिवहर सांसद रमा देवी, मुजफ्फरपुर लोकसभा सांसद अजय निषाद, नगर विधायक बिजेंद्र चौधरी, कुढ़नी विधायक डॉ. अनिल कुमार साहनी, नगर आयुक्त विवेक रंजन मैत्रेय, एडीजे पुनीत कुमार गर्ग, सिविल सर्जन उमेश चंद्र शर्मा ने विचार व्यक्त किये।

बीके स्नेहा बहन ने दया एवं करुणा का संकल्प सभी से कराया एवं फॉर्म भरवाया। साथ ही सभी को संकल्प कराया कि संसार को एक परिवार मानकर मैं हर व्यक्ति से भाईचारे की भावना से संवाद करूँगा। मैं अपने मन-वचन और कर्म से किसी को दुःख नहीं दूंगा। मैं सभी धर्मों का सम्मान समभाव से करूंगा।

यहां आकर आनंद की अनुभूति हुई: कलेक्टर

» शिव आमंत्रण, भरतपुर/राज.। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय भरतपुर की तरफ से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत दया एवं करुणा द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण दिवस के रूप में अंतराष्ट्रीय योग दिवस आयोजित किया गया। डॉ. उदयभान सिंह डीन, कृषि विश्व विद्यालय कुम्हेर, बरिष्ठ राजयोगी एडवोकेट अमरसिंह, राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शीला दीदी, प्रभारी आगरा सब जोन, ब्रह्माकुमारी कविता दीदी सह प्रभारी आगरा सबजोन, जिला प्रभारी भरतपुर की उपस्तिथि में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर आलोक रंजन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी विद्यालय में आकर मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई भाग दौड़ की जिंदगी में आज यह समय मुझे अत्यंत सुकून देने वाला है। विश्व शांति एवं दया करुणा की स्थापना के लौकिक कार्य एवं अगले जन्म के पारलौकिक प्रयास में यू ही हम सबका मार्गदर्शन करती रहे। माउन्ट आबू से पधारे ब्रकु रमेश भाई गायक द्वारा मधुर गीतों की प्रस्तुति दी गईं जैसा सोचोगे तुम वैसा ही बन जाओगे जैसा कर्म होगा वैसा ही फल पाओगे, राजयोगी बनो राजयोगी मेरे भाई बनो राजयोगी... दिव्य गीत प्रस्तुत किये गए।

करेली सेवाकेंद्र का 26वां स्थापना दिवस मनाया

» शिव आमंत्रण, करेली/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के करेली सेवाकेन्द्र के स्थापना के 26 वर्ष पूर्ण होने पर स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इसमें बाल व युवा कलाकारों द्वारा जोरदार प्रस्तुति दी गईं। नरसिंहपुर जिले की संचालिका बी.के. कुसुम दीदी, करेली सेवाकेन्द्र संचालिका बी.के. सरोज, तेन्दूखेड़ा से बी.के. प्रीति, गाडरवारा से बी.के. जानकी व बी.के. वंदना का सम्मान किया गया। जिले की 25 ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा केक कटिंग किया।

किसान सशक्तिकरण अभियान में किया किसानों का सम्मान

» शिव आमंत्रण, हाथरस (उ.प्र.) तरफरा रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ 'तपस्याधाम' पर जनपद की ग्राम पंचायतों के प्रधानों के मध्य विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डी.आर.बी कॉलेज के प्रबंधक एवं एम.एल.डी.वी कॉलेज के डायरेक्टर स्वतंत्र कुमार गुप्ता ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा पर्यावरण को बढ़ावा देने में आत्मनिर्भर किसान अभियान के अंतर्गत पूरे देश में गांव गांव में अनेकों कार्यक्रम किए जा रहे हैं जो बहुत सराहनीय है। उन्होने पर्यावरण संरक्षण हेतु आगे आकर कार्य करने का आह्वान किया गया। कार्यक्रम में ग्राम पंचायत बघेना, परसारा एवं कठेरिया गांव के प्रधानों एवं अन्य मेहमानों ने पीपल, बड व गूलर के पौधे लगाकर पर्यावरण बचाने का एक संदेश दिया। इस दौरान हाथरस जनपद प्रभारी राजयोगिनी सीता दीदी जी पौधारोपण करते हुए कहा कि हम प्रकृति की चिंता नहीं करते। यही वजह है कि प्रकृति ने भी अब हमारी चिंता करनी छोड़ दी है। हमने बिना सोचे समझे संसाधनों का दोहन किया है। जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है। जिससे बाढ़, सूखा, सुनामी जैसी आपदाएं आ रही हैं। धीरे-धीरे हम सबका अस्तित्व खत्म हो जाएगा। इसलिए जरूरत है कि हम सब जाग जाएं और पर्यावरण की रक्षा के लिए मिलकर कदम बढ़ाएं। कार्यक्रम में मुरसान प्रभारी ब्रह्माकुमारी बबिता बहन, ब्रम्हाकुमारी मिथिलेश बहन, ने सभी ग्राम प्रधानों एवं अन्य मेहमानों का पटका तिलक व मुकुट पहनाकर सम्मान किया।

हर कर्म परमात्मा की याद से हो

जीवन में घटने वाली हर एक घटना की महसूसता आत्मा ही करती है

खुद को आत्मा समझ एक परमात्मा की याद में रहें,तभी शक्ति मिलेगी

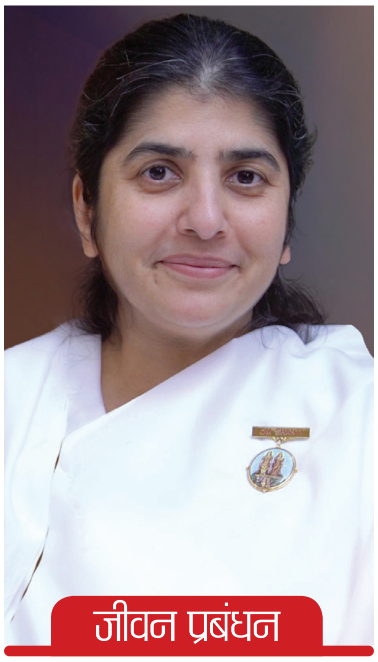

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। जैसे ही हमारी स्थिति स्टेबल हो जाएगी हम जो कर्म करेंगे वो ऑटोमैटिक अच्छी होगी। फिर हमें शुद्ध विचार, अच्छे शब्द, औपचारिक विहेवियर करना नहीं पड़ेगा वो अपने आप होता जाएगा। क्यूं ऐसा होता है जब हम भगवान को याद करने बैठते हैं तो मन इधर-उधर जाता है? हम सारा दिन में कितने लोगों को याद करते हैं, यहां बैठे आप अपने बच्चे को याद कर सकते हैं, क्या फ़ोटो सामने चाहिए? याद अपने आप आएगी जिनके साथ हमारा रिश्ता है उनको याद करना नहीं पड़ता उनकी याद ऑटोमैटिकअली आती है। भगवान को याद करने बैठते हैं टाइम भी निकालते हैं तैयारी भी करते हैं लेकिन याद करने बैठते हैं तो किसी और की याद आ जाती है। क्योंकि हमें उसका परिचय नहीं था हमारा उसके साथ रिश्ता नहीं था, अब हमें उसका परिचय मिला कि जैसे हम आत्मा वैसे वो भी आत्मा है। परम आत्मा मतलब जो हमारी 7 क्वालिटी है, वे 7 क्वालिटी में वो परम है और वो कहां का रहने वाला है? परमधाम का रहने वाला है। अब जब हमें उसे याद करना है तो उसको परम धाम में और वो क्वालिटी के साथ याद करना है और उसको याद करने से पहले खुद किस स्थिति में बैठना है कि मैं कौन हूं। अगर आप इस भान में हैं कि आप डॉक्टर तो पेशंट याद आएगा, मैं आत्मा तो परमात्मा याद आएगा, इसलिए खुद को जाने बैगेर पहले खुदा को नहीं पहचान सकते हैं। इसलिए जब मंदिर में जाते हैं तब सबसे पहली चीज़ क्या करते हैं? पहले चप्पल उतारते हैं चप्पल उतारना माना चमड़ी बहार उतारो पहले। सभी लेदर प्रोडक्ट्स आउटसाइड, मतलब चमड़ी ईगो बाहर। अंदर जाकर सबसे पहले क्या करते हैं? तिलक लगाते हैं मतलब कि मैं आत्मा। चमड़ी बाहर, मैं आत्मा अब भगवान को याद करो लेकिन हमने वो सारी चीज़ें फिजिकल में करनी शुरु कर दी। चप्पल बाहर, तिलक मस्त पर और फिर भगवान को याद। चप्पल बाहर मतलब शरीर, शरीर से संबंधित चीज़ों को बाहर,सब बातों को मंदिर से बाहर। सबसे पहले मैं आत्मा, अब मैं आत्मा को परमात्मा को याद करना नहीं पड़ेगा, याद ऑटोमैटिकअली आएगी और जैसे परमात्मा की याद आएगी वो एनर्जी से हम जुड़ जाएंगे। हमारी स्थिति में 7 ओरिजिनल संस्कार प्ले करने शुरू हो जाएंगे।

6- अगर हम पूजा कर रहे हैं, लेकिन उस टाइम सर्जरी को याद कर रहे हैं तो हमारी चार्जिंग नहीं हो रही। लेकिन हम सर्जरी कर रहे हैं और उस टाइम भगवान को याद कर रहे हैं तो हमारी चार्जिंग हो रही है। अब वो चार्जिंग जब होगी तो उसका बेनिफिट किसको होगा एनर्जी कहाँ डाउनलोड होगी? आत्मा पर डाउनलोड होगी। हमारी स्थिति कैसी हो जाएगी? जैसे ही हमारी स्थिति अच्छी होगी वो एनर्जी हमारे कर्म में वाइब्रेट हो जाएगी। अब अगर परमात्मा को याद करते हुए सर्जरी कर ली तो वो सर्जरी कैसी होगी? अंतर फ़ील होगा। सर्जरी वैसे भी परफेक्ट होती है आपकी लेकिन कभी-कभी थोड़ा सा है डर आ जाता है, घबराहट आ जाती है। कभी-कभी थोड़ा सा तनाव क्रियेट हो जाता है, कभी कोई उलझन आ जाता है तो उस समय उन बातों का असर मन पर पड़ता है, लेकिन अगर मन भगवान के साथ कनेक्टेड है और वो एनर्जी डाउनलोडेड है तब यहां क्राइसिस आएगा भी तो मन की स्थिति कैसी होगी? तब हम क्या करेंगे उस एनर्जी को अपने कर्म में युज करना शुरू कर देंगे। परमात्मा हमें मुरली में एक बहुत सुंदर लाइन कहते हैं बच्चे मैं बैठा हूँ मुझे यूस करो। परमात्मा की शक्ति को कैसे यूज़ कर सकते हैं और किन किन चीज़ों में यूज़ कर सकते हैं? आज दिन तक जब हम भगवान को याद करते थे तो या तो हम उससे अपनी जीवन की कोई छोटी बड़ी बातें माँग लेते थे क्योंकि हमें लगता था सब कुछ उसकी मर्ज़ी से हो रहा है तो उसको कह देंगे तो वो काम हो जाएगा। अगर हम भगवान से एक नई कार मांगें क्या वो हमें दे सकता है? परमात्मा सर्वशक्तिमान है, शांति का सागर है, पवित्रता का सागर, प्यार का सागर है, लेकिन उससे हम शक्ति लेकर अपनी शक्ति को बढ़ाकर हम ऐसे काम कर सकते हैं कि फिर हम गाड़ी ख़रीद सकते हैं, लेकिन परमात्मा को कहना है मेरा कर्म ठीक कर दो ये होगा नहीं।

7-आत्मा किसने देखा है, आत्मा कि ही तो स्थिति सारा दिन अनुभव कर रहे हैं। शांति, प्यार, शक्ति ये आत्मा का ही तो स्वरूप है। लेकिन आज हमारी स्थिति क्या है? तनाव, चिंता, परेशानी, निराशा ये सब आत्मा ही स्थिति है। आत्मा ही ये सब महसूस कर रही है। जैसे कि शरीर स्वस्थ होता है तो कैसा होता है? शरीर कमज़ोर होता है तो कैसा होता है? आत्मा स्वस्थ होती है तो आत्म निर्भर होती है लेकिन आत्मा जब कमज़ोर होती है तो वो छोटी-छोटी बातों में परेशान होती है, उदास होती है, हार मान जाती है, सारा दिन ज्यादा सोचती रहती है, चिंता करती रहती है तो जीवन की क्वालिटी क्या रह जाती है? तो हमारे जीवन का ये लक्ष्य होना चाहिए हमारे हर संकल्प, बोल और कर्म में मुझे आत्मा की शक्ति केवल बढ़ती रहे, आत्मनिर्भर रहूं। आत्मा सशक्त होती जाए, कोई ऐसा कर्म न करें जिससे आत्मा की शक्ति घटे क्योंकि अगर आत्मा की शक्ति घटी तो बाहर सब कुछ तो पा लेंगे लेकिन ख़ुशी, सुख, प्यार और शांति अभी भी ढूंढते रहेंगें क्योंकि आत्मा कमज़ोर हो गई है। बाहर को प्रोटेक्ट करने के लिए अंदर का नुक़सान कर रहे हैं, लेकिन बाहर प्रोटेक्ट हो भी जाता है, लेकिन जब अंदर प्रोटेक्शन नहीं होती है तो बाहर सब कुछ हो तो भी जीवन में ख़ुशी अनुभव नहीं होता है। आजकल लोग कहते हैं मेरे पास सब कुछ है लेकिन संतोष नहीं है तो संतोष आर्थत भरपूर आत्मा।

राजयोग के अभ्यास से कैंसर से पाई मुक्ति

शिव आमंत्रण, छतरपुर/मप्र। मेरे शरीर का नाम सावित्री सिंह है। मैं छतरपुर जिले की तहसील (लवकुश नगर) में रहती हूं। मैं करीब 8 वर्ष से रोजाना मुरली का अध्ययन, राजयोग का अभ्यास कर रही हूं। एक दिन ऐसा आया जब मेरे छोटे बेटे की शादी में मेरी अचानक तबीयत खराब हुई। पहले मुझे पथरी की शिकायत थी उसका हमने ऑपरेशन कराया था लेकिन जब दर्द ज्यादा हुआ तो सोचा चेकअप, करा ले लेकिन कोरोना काल के समय कहीं भी ले जाना संभव नहीं, हो पा रहा था। मेरी दिन पर दिन तबीयत बिगड़ने लगी, मैंने बाबा से कहा, बाबा ऐसा मेरा साथ क्या हो रहा है। अचानक बड़े बेटे ने कहा के भोपाल चलो तो मैंने पूछा उसने कहा सब कुछ नॉर्मल है, लेकिन डॉक्टर को एक बार चेकअप कराना जरूरी है तो मैं और मेरा बड़ा बेटा, भोपाल एम्स हॉस्पिटल पहुंचे वहां बॉडी चेकअप हुआ, तो पता चला कि मुझे गर्भाशय में कैंसर है फिर मेरा गर्भाशय ऑपरेशन हुआ उसको निकाल दिया गया मेरे साथ मेरे पास इलाज के लिए इतने पैसे नहीं थे फिर भी मेरे दोनों बेटे ,और बेटी ने हार नहीं मानी और वह मुझे हर 15 दिन में कीमो के लिए ले जाते रहे, मेरा मशीनों के द्वारा कई बार चेकअप हुआ सिकाई हुई, लेकिन मुझे 'बाबा कि इतनी मदद मिली' कि कुछ भी पता नहीं चलता था, ऐसा लगता था मानो मैं एक फरिश्ता बन गई हूं ,और बाबा ने मुझे अपनी गोदी में बिठा लिया। कम से कम मुझे 8 कीमो और 32 सिकाई हुई और मानो बाबा ने मुझे दूसरी जिंदगी दे दी है। मेरे जीवन में मेरी अपनी बीमारी के साथ-साथ कई परिस्थितियां एक साथ आयीं । मेरी बड़ी बहू के डिलीवरी पहली बार होने थी ,लेकिन उसे भी डॉक्टर ने मना कर दिया कहा कि जच्चा और बच्चा दोनों खतरे में हैं, मैं दोनों को नहीं बचा सकूंगा। मैं बाबा से उस समय बहुत लड़ी, मैंने कहा बाबा मेरी नैया आपको ही संभालना है, क्यों मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहे हो लेकिन, बाबा ने मेरा हाथ और साथ नहीं छोड़ा। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं, मैं स्वस्थ आत्मा हूं, तो मैं यह अभ्यास रोज करती थी। और सच में अनुभव होता था कि बाबा मेरे सामने खड़ा है मेरे सर पर हाथ रख रहा है। बच्चे तुम चिंता मत करो मैं बैठा हूं । बस इसी विश्वास ने मेरे अंदर एक नई ऊर्जा भर दी और अभी तो मेरी खुशी का ठिकाना भी ना रहा जब डॉक्टर्स भी आश्चर्य करने लगे की यह तो बड़ी ही वंडरफुल बात है इतनी बड़ी बीमारी इतने कम समय में कैसे कवर कर ली। उन्होंने बताया की कैंसर चौथी स्टेज पर पहुंच गया था तब मुझे पता चला और मेरे बच्चों ने मुझे कुछ भी नहीं बताया, मैं अपने दोनों बच्चों का और बाबा का, साथी हमारी बहन जी का जिन्होंने मुझे हर परिस्थिति में हिम्मत बढ़ाई शुक्रगुजार हूं, कि मेरे रूहानी सर्जन बाबा ने मेरी इतनी गंभीर बीमारी को भी सहज खत्म कर दिया, जैसे कि 'पहाड़ को राई और राई को रूई बना दिया। शुक्रिया बाबा शुक्रिया... वाह मेरा भाग्य, वाह मेरा बाबा वाह।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

युवा देश के कर्णधार होते हैं, ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़कर आज लाखों युवाओं का जीवन बदल गया है, ऐसे परिवर्तनकारी युवाओं की अनुभव गाथा...

परमात्म शक्ति ने हमें शक्तिशाली बनाया

शिव आमंत्रण। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र के पास मेरा लौकिक घर होने के कारण मैं बचपन से मेडिटेशन केंद्र पर जाती जरूर थी किंतु कुछ भी समझ नहीं आता था। मेरी शादी के बाद जीवन में कई तरह की जिम्मेंदारियों के साथ तनाव ने भी घेर लिया। फिर मैंने नजदीक के मेडिटेशन केंद्र पर जाकर तरीके से सेवन डेज कोर्स पूरा की और रोजाना अभ्यास करने लगी जिससे आज हम परमात्म शक्ति को प्राप्त कर खुद को आत्मिक रूप से शक्तिशाली महसूस करती हूं। मैं सबसे अपील करती हूं कि आप भी अपने नजदीकी सेवाकेंद्र पर जाकर राजयोग मेडिटेशन को सीखें और जीवन सरल बनायें।

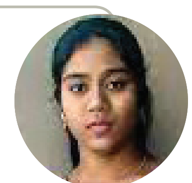

- माणिक गुप्ता, तमिलनाडु

व्यर्थमुक्त बनकर खुशनुमा जिंदगी पाया

शिव आमंत्रण। जीवन व्यर्थ से भरा पड़ा था नकारात्मकता अपने चरम पर था। जिसके कारण जीवन में दुःख अशांति स्वाभाविक था। तभी यूट्यूब पर एक विडियो ने हमारे सोच को बदल कर रख दिया। उसके बाद हमने ब्रह्माकुमारीज का पूरा कोर्स ऑनलाईन मेडिटेशन सीख कर रोजाना अपने नजदीकी सेवाकेन्द्र पर मुरली क्लास भी करने लगा। उसके बाद हमने अपने जीवन से व्यर्थ सोच और कर्मों को निकाल कर फेंक दिया। तभी से जीवन खुशनुमा बन कर औरों के लिए भी प्रेरणादायी बन चुका है। आज हमारे दोस्त भी हमसे प्रभावित होकर मेडिटेशन अभ्यास कर रहे हैं।

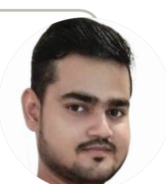

राहूल कुमार, इंदौर , मध्यप्रदेश

{ स्वयं में ज्ञान और धारणा के फल लगे हुए हों तो हर पुरुषार्थ फलीभूत हो सकता है }

आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर

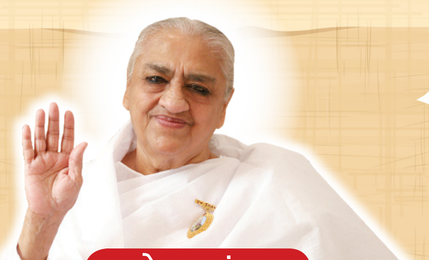

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

आत्म अभिमानी बनो तब सत्यता की करंट आएगी

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। हर मुरली में आपने नोट किया होगा कि बाबा बार-बार कहते हैं कि- अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। आत्म-अभिमानी बनो, देह भान छोड़ो, बच्चे बॉडी कान्सेस में नहीं आओ। भिन्न-भिन्न रूप से हर मुरली में यह पाठ जरूर होगा, वह भी 4-6 बारी से भी ज़्यादा ही होगा। तो यह क्यों होता है? क्योंकि फाउण्डेशन ही यह है। जब तक हमारा यह फाउण्डेशन पक्का नहीं है, हम आत्म-अभिमानी नहीं हैं तो हमको बाप की याद कैसे आयेगी। कनेक्शन ही नहीं जुटेगा ना। रबर उतरा ही नहीं तो करेन्ट कैसे आयेगी। जैसे यह तार है इससे रबर नहीं उतरा हुआ हो तो आप सारा दिन उसको जोड़ने की कोशिश करो, जुटेगी नहीं। तो यह बॉडी कान्सेस का रबर जो है वह उतरा नहीं और हम सोचते हैं - आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध हो जाए तो वह कैसे होगा? होता ही नहीं। फिर कोई-न-कोई बात में आ जायेंगे, कोई-न-कोई संकल्प में आ जायेंगे, चाहे निगेटिव में जाओ, चाहे वेस्ट में जाओ, चाहे कोई भी साधारण संकल्पों में जाओ तो जो एम है वह पूरी नहीं हो सकती है। इसीलिए आत्मा का निश्चय, आत्मा का नशा यह बहुत जरूरी है अगर वह नशा नहीं है तो बाबा की इतनी याद नहीं रह सकती है जितना आप चाहते हो। बाबा क्यों कहते कि बच्चे नशे में रहो, नशे में क्या होता है? सारी सुधबुध भूल जाती है। ऐसे हम आत्मा बन जाएँ यानि उस स्थिति में स्थित हो जाएँ तो आत्मिक नशा ऐसा है जो और सब बॉडी कान्सेस या बॉडी कान्सेस के दुनिया के जो भी साधन हैं उसको भूल जायेंगे। एक ही तरफ मन-बुद्धि लग जायेगी तो ऐसी साधना बाबा चाहता है लेकिन इसके लिए अभ्यास बहुत चाहिए। बुद्धि की आदत जो है, बुद्धि में संस्कार पड़ गये हैं निगेटिव और वेस्ट के। वह तो 63 जन्म का अभ्यास है, न चाहते समझो कोई बात हो गई, किसकी सुनी, किसकी देखी जो रांग है, है रांग लेकिन उसकी गलती को देख करके हमको उसके प्रति निगेटिव संकल्प चलता है, आदत हो गई है, 63 जन्म का संस्कार है। लेकिन जिसके प्रति निगेटिव चलेगा तो उसके प्रति थोड़ी ईर्ष्या या घृणा भाव ज़रूर आयेगा। शुभ भावना के बजाए उससे किनारा करने का सोचेंगे। अच्छा मानो 100 परसेन्ट वह रांग है। परन्तु वह रांग है, ठीक है लेकिन मेरे को उसकी फीलिंग आ गई तभी तो निगेटिव संकल्प चला ना। कोई क्रोध करता, ग्लानि करता या इनसल्ट करता है तो बहुत करके इसमें ही निगेटिव संकल्प चलते हैं। अच्छा उसने रांग किया और मैंने उसके निगेटिव की फीलिंग अपने अन्दर धारण की तभी मेरा निगेटिव संकल्प चला, तो वह रांग है और मेरे को जो फीलिंग आ गई और निगेटिव संकल्प चला तो क्या यह मैं राइट हूँ? बाबा ने कहा है कि वह क्रोध करता है, इनसल्ट करता है वह तो रांग है लेकिन आपने उसके प्रति सोच लिया, आपके अन्दर ईर्ष्या भाव या निगेटिव संकल्प उस आत्मा के प्रति आया तो रिज़ल्ट क्या हुई? आप राइट हुए?

क्रमशः...

प्रभु इस धरा पर आकर पुनः अपनी न्यारी लीला करते हैं

☑ अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भेजा पत्र

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। वास्तव इसी प्रकार अमेरिका के राष्ट्रपति हैरी एस ट्रूमेन को भी पत्र और साहित्य भेजा गया तथा इस ईश्वरीय यज्ञ में आकर वर्तमान संगमयुग के महत्व को समझने तथा आत्मानुभूति करने के लिये निमंत्रण भी दिया गया। देश-विदेश के पुस्तकालयों में ईश्वरीय निमन्त्रण तथा साहित्य सामान्य लोगों को भी ईश्वरीय कार्य से परिचित कराने के लिये बाबा ने अनेकानेक पुस्तकालयों और विश्व विद्यालयों में बहुत सुन्दर छपा हुआ साहित्य, कल्पवृक्ष तथा सृष्टि-चक्र के चित्र और ईश्वरीय निमन्त्रण भेजा।

न्यूयार्क (अमेरिका) की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी की लायबेरी, कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी, शिकागो यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी आदि-आदि ने उसकी पहुंच दी और हर्ष प्रगट किया।

बम्बई से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी साप्ताहिक इल्लस्ट्रेटिड वीकली, अरानाकुलम से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र दीपक आदिआदि समाचार पत्रों के सम्पादकों को भी पत्र और साहित्य भेजा गया ताकि जनता के लाभार्थ वे उसे प्रकाशित भी करें और स्वयं भी उससे लाभ उठायें। परन्तु किसी ने उसकी पहुंच मात्र लिख दी और किसी ने तो इतना भी कष्ट न किया। मनुष्य कह तो देते है कि-हे प्रभु तेरी लीला न्यारी है परन्तु जब वह प्रभु इस धरा पर आकर पुनः

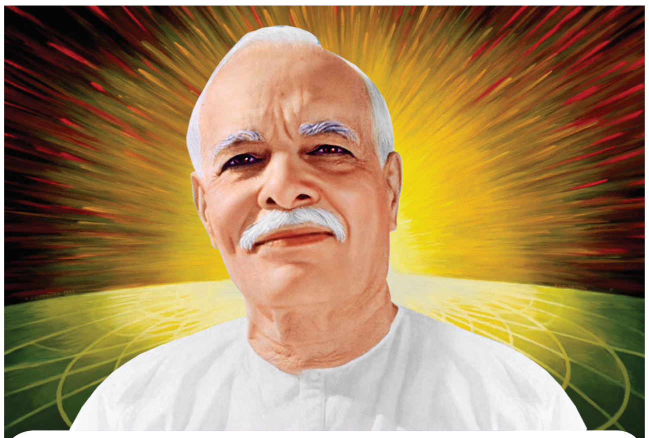

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

☑ अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति को भी आत्मानुभूति करने भेजा गया पत्र

अपनी न्यारी लीला करते हैं, तब मनुष्य उसे समझने में असमर्थ सिद्ध होते हैं। देखिये तो पाकिस्तान के वित्तमन्त्री बी. जमान जी ने अपने पत्र में ब्रह्माकुमारियों को जो अपना पत्र लिखा उसमें उन्हें कल्प पहले की तरह विकारी विश्व को मुक्ति दिलाने वाली प्रजापिता ब्रह्माकुमारी, पोस्ट आफिस बाक्स नं 0381, कराची - इस पते पर भेजा, परन्तु फिर भी उनके कार्य से पूर्णतया लाभ लेकर स्वयं विकारों से मुक्त होने का पुरुषार्थ नहीं किया!

इस प्रकार हमने बाबा द्वारा भिजवाये गये कुछेक पत्रों, तारों तथा ईश्वरीय साहित्य का जो समाचार दिया है, उसके पीछे हमारा उद्देश्य यह बताना है कि बाबा ने विभिन्न प्रकार से ईश्वरीय सेवा करने का प्रशिक्षण पहले से ही दे दिया था।

अब सतयुग की स्थापना के कार्य की गति को तीव्र करने के लिये बाबा ने यज्ञ-वत्सों को भारत के विभिन्न नगरों में भेजने का संकल्प भी किया था। उस समय सृष्टि-चक्र तथा कल्प-वृक्ष के दिव्य चित्र भी काफी संख्या में छपे हुए थे। ये दोनों चित्र दिव्य-बुद्धि और दिव्य दृष्टि पर आधारित थे। बाबा इन चित्रों को बहुत ही अनमोल बताते थे। वे कहा करते थे कि यह कल्प-वृक्ष ऐसा लगता है कि जैसे मोर पंख फैलाकर खड़ा होता है। जो इस चित्र को यथार्थ रीति से समझेगा वह सतयुगी विश्व के स्वराज्य के ताउसी तख़्त को जीतेगा। सृष्टि-चक्र के चित्र के बारे में बाबा कहते थे कि- यह आत्माओं के अनेक जन्मों को बताने वाली जन्मपत्री है अथवा जीवन की पहेली को हल करके विश्व के स्वराज्य की चाबी अथवा लाटरी देने वाली ईश्वरीय सौगात है।

उन दिनों बाबा ने बहुत से ईश्वरीय निमन्त्रण पत्र पुस्तिकाएं, हैडबिल, बोशर आदि-आदि भी छपवाये थे। इनमें बताया गया था कि मनुष्य दिन भर इस प्रकार के वाक्य बोलता है कि-यह मेरा शरीर है, यह मेरी जमीन है, ये मेरे जेवर है, आदि-आदि। इन वाक्यों में मेरा, मेरी, आदि शब्द प्रयोग करने वाला मैं वास्तव में कौन हूँ? इस साहित्य में यह भी बताया गया था कि हम एक सेकण्ड में मन को वश करके विश्व के स्वराज्य की चाबी अपने हाथ कैसे कर सकते हैं।

सृष्टि-ड्रामा के सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक का इतिहास तथा संगमयुग का वृत्तान्त और भविष्य के वृत्तान्तो का भी इसमें उल्लेख था। इसके अतिरिक्त सर्वशक्तिवान परमात्मा के चरित्रों तथा मन को वश में करने के तरीके पर पुस्तकें भी हिन्दी, अंग्रेजी, सिंधी आदि-आदि भाषाओं में छपाई गई थीं। कुछ प्रश्नावलियों भी प्रकाशित की गई थी। जोकि नये जिज्ञासुओं से भराने के लिये थीं। इस प्रकार इन अखों-शखों के साथ अब शिव-शक्तियां अथवा ज्ञान-गंगाएं भारतवासियों की ज्ञान-सेवा के लिये तैयार थीं। **क्रमशः...**

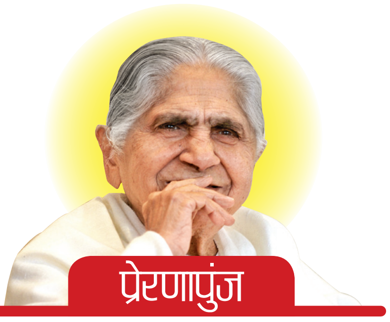

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

कार्य बाबा का है तो वह कर और करा रहा है, हम सब माध्यम मात्र हैं

☑ देह-अभिमान छोड़ एकांतप्रिय बन रियलाइज करें...

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। हम दुःख किस बात का, सहन किस बात का करें? आजकल सहन करना किसको कहते हैं? और कुछ बात है नहीं, शरीर की व्याधि भी सहन कर सकते हैं, सर्दी-गर्मी भी सहन कर सकते हैं लेकिन भाव-स्वभाव को सहन नहीं कर सकते हैं। मुश्किल क्या हुआ है कि हम एक दो को और उनके भाव-स्वभाव को समझ नहीं सकते हैं। ब्राह्मण-पन की जो नेचर है, वह हमारी नेचुरल नेचर हो जायें तब सर्व से प्रसन्नता का सर्टिफिकेट मिले। यह भी देखा जाता है जो सदा प्रसन्न रहता है, सन्तुष्टता का व्यवहार करता है तो वह प्रशंसा का महिमा के योग्य बन जाता है। स्वयं भी सन्तुष्टता का व्यवहार करता है तो वह प्रशंसा वा महिमा के योग्य बन जाता है। स्वयं की सन्तुष्टता तब कहेंगे जब बाबा की आशाओं को हम पूर्ण करके दिखायें। हम नहीं कर सकते हैं, तो स्वयं ही सन्तुष्ट नहीं है और बाबा भी हमारे से सन्तुष्ट नहीं है। बाबा जो हमें इतनी प्यार से पालना देते, फिर पढ़ाते भी कितना प्यार से हैं। हम कहते थे बाबा हमें और कुछ नहीं चाहिए। दो बातें बाबा से मांग सकते हैं। एक आप बुद्धिवानों के बुद्धिवान हैं तो मैं वारिस के रूप में आपसे बुद्धि का वर्सा लेना चाहती हूँ, बुद्धि अपने जैसी थोड़ी दे दो। दूसरा बाबा जैसे आप अथक हो - ऐसे हम भी अथक हो। देखो बाबा कितने प्यार से कितने घण्टे तक बैठ हर एक बच्चे को बाबा कितना दिल से खुश करता है। कैसे अमिट छाप लगा देता है - यह ऐसी छाप, ऐसी घड़ी, ऐसा दिन कभी किसको भूल नहीं सकता है। एक-एक बच्चे के रग को जान हर बच्चे को सन्तुष्ट कर देता। हर बच्चे का हक है - सच्चा पुरूषार्थ करके सुबान-अल्ला बन जाए। बाबा समान बन जाए। माता हो, कुमारी हो, बच्चा हो, वानप्रस्थी हो, प्रवृत्ति में रहने वाला हो, सेन्टर पर रहने वाला हो, सबको हक है। सिर्फ लगावमुक्त हो, निर्विघ्न स्थिति हो। अपनी स्थिति को पहले निविघ्न बनाना - यह बड़ा भाग्य है। निर्विघ्न स्थिति कैसे बनेगी? मेरी पर्सनल उन्नति तभी है जब देह-अभिमान को छोड़, एकान्तप्रिय बन अन्दर से रियलाइज करें। चित्त में उन्नति की लगन लगी हो। यह लगन ही निर्विघ्न स्थिति बनाने में मदद करती है। भले ही कितनी भी जवाबदारी हो, लेकिन अपनी उन्नति के लिए टाइम जरूर निकाले। निर्विघ्न स्थिति बाबा के साथ से सहज बनती है। परचिन्तन से फ्री हो स्वचिंतन में रहने से निर्विघ्न स्थिति सहज बनती है। न्यारे हो करके, सेकण्ड में साक्षी हो करके पार्ट बजाने से निर्विघ्न स्थिति सहज बनती है। तेरा-मेरा, तू-मैं से सदा फ्री रहें। कभी तू मैं का आवाज नहीं। मधुरभाषी बनें। भाषा में मधुरता हो, सरलता हो। सरलता में समझ भी है, सत्यता भी है, स्पष्ट है, यह सब हमको मदद करते हैं हमारी निर्विघ्न स्थिति बनाने के लिए वृत्ति शुद्ध है तो भाषा बहुत मीठी हो जाती है। फिर वृत्ति में स्नेह है, सच्चाई है तो भाषा ऑटोमेटिक ऐसे होती है। तो ऐसी हमारी स्वयं की निर्विघ्न स्थिति हो, साथियों के साथ भी निर्विघ्न हो, सेवा भी निविघ्न हो...सफलता हमारी सखी हो करके साथ चलती रहे। होगी या नहीं - क्वेश्चन मार्क नहीं है। जिसकी स्थिति निर्विघ्न है वह जानते है हर कार्य में बाबा का साथ है, कार्य बाबा का है। अगर मेरा कार्य है तो विघ्न आता है, मुझे करना है तो विघ्न हैं। अगर कार्य बाबा का है, बाबा कर, करा रहा है, इतना समय से कराता आ रहा है आदि से आज दिन तक, तो विघ्न ठहर नहीं सकता। हमारी निर्विघ्न स्थिति सब बातों को पार करके सहज हो बाबा के गले की माला बना देती है। कभी विघ्नों से घबरायें नहीं हैं, डर नहीं लगा है। लेकिन विघ्न आया, तो उसको न देख बाबा को देख।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

जीवन में अपनाएं श्रेष्ठ योग का मार्ग

आपको जीवन में अगर श्रेष्ठ मार्ग अपनाना है तो श्रेष्ठ योगी जीवन का भी मार्ग अवश्य अपनायें। ऐसे नहीं बस नाम के लिए इस मार्ग पर चलने लगे और फिर कुछ गड़बड़ होने लगे मन हिलने लगे, कहीं बुद्धि भटकने लगे, उससे नुक़सान हो जाएगा, बदनामी भी हो सकती हैं इसलिए अच्छी तरह निर्णय लेकर पवित्रता का मार्ग अपनाना हैये नहीं बस हमें सेंटर पर समर्पित होना है सेवा करनी है,बहुत अच्छी बात है पर सच्ची सेवा श्रेष्ठ योगी ही कर सकेंगे ये जोड़ लेना।बहुत अच्छा चिंतन करके अपने भय को दूर करेंगे,अपने निर्णय को स्ट्रॉन्ग बनाएंगे।योग करेंगे बहुत अच्छा।बाबा ने जो आज तक योग कीयुक्तियाँ बताई हैं उन सबका अभ्यास करेंगे हैं यूट्यूब पर भी है।कई कुमारियों को तक़लीफ़ होती है की माँ बाप फ़ोर्स करते हैं की शादी तो करनी ही है,हम तुम्हें कब तक संभालेंगे,तुम अपना ठिकाना निश्चित करो। कई तो साफ़ कहते हैं कि सेंटर में जाके रहो,हमें ख़ुशी होगी नहीं तो शादी करो। वो जानते हैं कि दुनिया बहुत गंदी है,ऑफिसों में भी कितना गंदा माहौल रहता है, लोग अच्छी तरह जानते हैं। अगर आप अपने प्योरिटी में बहुत स्ट्रांग है तो आपके प्योर वाइब्रेशन दूसरों के मन के विचारों को भी बदल देंगे।अगर आप घर में रहकर अभ्यास करती हैं मैं इस घर की ईस्ट देवी हूँ। मैं इस घर में पवित्रता की देवी हूं। तो आपकी जो वाइब्रेशन होंगे वे आपके परिवार वालों पर गहरा असर डालेंगे और वे आपको शादी करने के लिए बार-बार विवश नहीं करेंगे। ऐसा अनेकों का अनुभव हो चुका है। लेकिन अपने ही मन में दुविधा होती है। व्यर्थ संकल्प होते हैं करूं या न करूं इधर जाऊँ या इधर जाऊं, तो ये दुविधा दूसरों में भी दुविधा पैदा करती है। माँ बाप भी सोचते हैं कल ये इस मार्ग पर चल पाए यह न चल पाए। कोई बुरी चीज हो गई। हमारी नाक काट जाए तो, वो सोचते हैं हमें ये तो नहीं करना है।तो आप अगर खुद में बहुत स्ट्रांग रहेंगी, आप अपनी प्योरिटी में स्ट्रांग होंगी, पवित्रता की इस ईस्ट देवी बन जाएंगी,अपनी अपवित्र कामनाओं को जीत लेंगी तो कोई भी आपको शादी करने के लिए नहीं कहेगा यह सूक्ष्म रहस्य आपको समझ लेना चाहिए। आपको ये भी देख लेना है मेरे इस जन्म में मेरे संस्कारों पर किस चीज़ का प्रभाव रहा है,सूक्ष्म गति है यह बहुत, मैंने क्या क्या स्वप्न देखे हैं जीवन में,क्या बनना चाहते हैं, मैंने क्या क्या कल्पना की थी उन पर विचार कर लो।ये तो कल्पना नहीं की होगी कि भगवान आएगा, वो हमें अपना बनाएगा हमें शक्तियां देगा, हमें बहुत प्यार करेगा ।हम योगी बनेंगे लेकिन जब बाबा के बने तो ये सब संकल्प मनुष्यों को चलने लगते हैं,उमंग उत्साह हो जाती है बहुत। तो यदि आप समर्पित करती है अपने को तो ये बहुत बड़ा भाग्य होगा लेकिन जिन उमंगों के साथ आप समर्पित हो वही उमंग आपके पूरे जीवन में चलती रहे। इस पर सबको बहुत ध्यान देना है। कई लोग बड़े उमंग रखते हैं समर्पित होने की बाबा का घर उन्हें बहुत प्यारा लगता है और खीच होती है,बहुत अच्छी बात है ये पवित्र आत्माओं के संस्कार होते हैं, लेकिन फिर धीरे धीरे सेवाओं में रहते हुए आपसी संगठन में रखते हुए जब हम एक दूसरे को देखने लगते हैं। अपने को देखना भूल जाते हैं तो ये ईश्वरीय नशा उमंग उत्साह भी धीरे धीरे कम होने लगता है।कन्याओं को अकेलापन बहुत भासता है पूछ लो अपने से कोई साथी चाहिए जिससे बातचीत कर सकें जिससे मन बहला सके,लेकिन सभी साथी स्वार्थी हैं। आजकल इसलिए ऐसे किसी साथी के चं व्यूह में उलझने की ज़रूरत नहीं है नहीं तो उसे निकालना बेहद मुश्किल होता है। हम डिपेंडेंट हो जाते हैं एक दूसरे पर तो जो इच्छा होती है कोई साथी चाहिए जीवन में कोई साथी हो उसका बहुत अच्छा उत्तर है लेकिन आप जब वो अनुभव करेंगे तभी आपको क्लियर होगा और वो है भगवान को अपना खुदा दोस्त बना लो, माता पिता बना लो शिक्षक सतगुरु बना लो, एक-एक चीज पर चिंतन करें।

क्रमशः..

☑ अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भेजा अधिकारियों को पत्र

राजयोग से लाभ और अष्ट शक्तियों की प्राप्ति

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

☑ शिव शक्तियों की भुजाएं मदद का प्रतीक हैं। बड़ा से बड़ा कार्य संपन्न एकता से संभव है

किसी से कभी भी कोई मदद चाहिए तो कहा जाता है कि हाथ बढाओ। रावण के सिर, अंहकार का प्रतीक हैं, जब किसी को अभिमान आ जाता है तो कहा जाता हैं कि यह व्यक्ति अभिमान में सिर ऊपर लिए घूम रहा है। यह अंहकार ही सर्व बुराइयों और सर्वसमस्याओं की जड़ है। इन बुराइयों को समाप्त करने के लिए दिव्य शक्तियों की आवश्यकता है। तभी तो नवरात्री के बाद दशहरे का त्यौहार आता है। भावार्थ यह है कि शिव शक्तियों ने दिव्य शक्तियों से बुराइयों पर विजय प्राप्त की। वास्तव में सर्वशक्तिमान परमात्मा ही सर्वोत्तम गुणों और शक्तियों का स्त्रोत है। मनुष्य जब स्वयं को आत्मा निश्चय कर अपने मन को उस निराकार परमपिता परमात्मा शिव में एकाग्र करता है तो इस योगाभ्यास से पवित्रता, शान्ति, शक्ति, आनन्द आदि की प्राप्ती होती है। यह सर्वोत्तम योग हमें कई प्राप्तियां सहज कराता है।

राजयोग से जीवन में लाभ

राजयोग से व्यक्ति अपने जीवन में त्रि-आयामी रूप से प्राप्तियों का अनुभव कर सकता है, जो इस प्रकार है :-

1. **स्वयं में:-** व्यक्ति अपने मन को शांत और सन्तुलित रखने की विधि सीख लेता है जिससे कई प्रकार के तनाव, नकारात्मक भावनाओं एवं कमजोरियों से मुक्त हो जाता है। वह स्वयं में आत्मा सन्तुष्टि का अनुभव करता है।
2. **संबंधों में :-** इस योग से व्यक्ति में सद्‌गुण विकसित होते हैं और उसे यह समझ आ जाती है कि हर व्यक्ति में कोई न कोई विशेषता है तो एक दूसरे में दोष-दर्शन के बजाय गुण-दर्शन करने लगता है जिससे आपसी सम्बन्ध मधुर हो जाते हैं और व्यक्ति व्यवहार कुशल हो जाता है।
3. **परिस्थिति और समस्याओं में:-** मनुष्य के जीवन में समय प्रति समय अनेक चुनौतियां आती रहती हैं जिन्हें धैर्य और साहस से पार करना होता है। योगाभ्यास द्वारा व्यक्ति अपने में अनेकों आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करता है और जब वह योगभ्यासी मानव सही समय पर सही शक्ति का प्रयोग करता है तब वह अपने जीवन को निर्विघ्न बना सकता है।
4. जीवन में इन अष्ट शक्तियों की बहुत आवश्यकता होती है क्योंकि यह हमारे जीवन के अलग-अलग पहलुओं को सन्तुलित करने में विशेष सहायक होती हैं और जीवन का मूल आधार बन जाती हैं। इन शक्तियों के माध्यम से ही व्यक्ति अपने परिवारिक, सामाजिक और व्यवसायिक जीवन में संतुलन रख पाता है। इनके अभाव में वह टूटकर बिखर जाता है और स्वयं को व अपने सम्बन्धों को संभालने में नाकाम रहता है। इन अष्ट शक्तियों को विकसित करने के लिए हमें गुणों की धारणा करना आवश्यक है तभी हम अपने जीवन में रही हुई कमज़ोरियों या बुराइयों के ऊपर विजयी हो सकते हैं।

राजयोग से अष्ट शक्तिओं की प्राप्ति

1. सहनशक्ति को विकसित करने के लिए प्रेम और क्षमा का गुण आवश्यक है, तभी हम क्रोध रूपी शत्रु पर विजयी हो सकते हैं। सहनशक्ति एक महान शक्ति है जिन्होंने सहनशक्ति को धारण किया है वह जीवन में महानता के शिखर पर पहुँच जाते हैं। विश्व में जो भी महान हस्तियां हुई है वे अपने जीवन में बहुत कुछ सहन करके ही सफलता के शिखर पर पहुँची हैं। सहनशीलता दो शब्दों से मिल कर बना है सहन + शीलता। शील का अर्थ है चरित्र। व्यक्ति जब सहन करता है तो उसका शील निखरता है, यानी चरित्र निखरता है, और तब व्यक्ति में वह शक्ति बनकर उसे महानता के शिखर पर पहुँचाता है। उदाहरण के लिए जैसे महात्मा बुद्ध की कहानी को देखिए-

स्वयं को धोखा मत दो अपनी जांच करो

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

☑ जीवन हो लगाव मुक्त, सुख-दुख में समभाव रहें

कितना स्वयं स्वयं की जांच करो, ज़रा अपने आप को देख लो आत्ममंथन, आत्म निरीक्षण, आत्म अवलोकन, आत्म दृष्टि स्वयं स्वयं को देखो, क्या हो रहा है, क्या पाया है, क्या खोया है। 1-आज सारे दिन में पाप किया या पुन्य, पाप कितने किये और पुन्य कितने किये। रात्रि में अपनी जांच करनी हैं, या दिनचर्या में अपनी जांच करनी है। स्वयं को ही देखना कि आज जो कुछ किया वो पुन्य था या पाप और उसके लिए पुण्य क्या है और पाप क्या है यह जानना आवश्यक है पाप की परिभाषा क्या है और पुन्य की परिभाषा क्या है।

द्वापर से मनुष्यों ने पाप और पुण्य की चर्चा की है, हर धर्म में पाप और पुण्य की चर्चा की है। पाप किसे कहेंगे और पुन्य किसे कहेंगे ये सोचने का विषय है, और हर व्यक्ति गहराई से इसे सोचे पाप क्या है और पुन्य क्या है और सबसे सरल परिभाषा है पुन्य अर्थात वो सारे कर्म जो होश में किए जाए। पाप अर्थात जो कर्म बेहोशी में किये जाए।घर का मालिक सोया है चोर आकर चोरी कर जाएगा। एक बहुत पापी व्यक्ति किसी गुरु के पास पहुंचता है कहता है मैं क्या करूँ ऐसा कोई पाप नहीं है संसार में जो मैंने नहीं किया क्या आप मुझे स्वीकार करो गे, वो गुरु कहता है भगवान ने तुम्हें स्वीकार किया मैं तुम्हें क्यों नहीं स्वीकार करूँगा मैं तुम्हें स्वीकार करता हुँ वह कहता हैं मैं जुआ भी खेलता हूँ मैं शराब भी पीता हूँ,और आप मुझे कहेंगे यह सब छोड़ दो वो मुझसे नहीं होगा, मुझसे छूटता ही नहीं अब आप बताओ मैं क्या करूं। गुरु कहता है मैं तुम्हें वैसे ही स्वीकार करता हूं जैसे तुम हो मैं तुम्हें ये नहीं कहूंगा कि ये छोड़ो वो छोड़ो पर क्या तुम मेरे लिए एक चीज़ कर सकते हो वो कहता है हां जब भी कोई पाप कर्म करो तो सोचो कि मैं तुमको देख रहा हूं बस इतना काम करना फिर तुमको जो करना है वो सब जारी रखना पर हमेशा सोचना कि मैं तुम्हें देख रहा हूं।

कुछ दिनों के बाद वो व्यक्ति फिर आया वो गुरु पूछता है कैसा चल रहा है तुम्हारा पाप कर्म वो कहता है जब भी कुछ करने गया आपकी आंखे घूरती रहती थी। कैसे करूं कर ही नहीं पाया निरंतर अंदर होश था, निरंतर अंदर ये बात थी कोई देख रहा है हम विश्व के स्टेज पर है सारी दुनिया हमें देख रही हैं चाहे बंद कमरा हो या घना जंगल परंतु निरंतर बाप की दृष्टि हम पर हैं और निरंतर सारे विश्व की दृष्टि हम पर है हम जो करेंगे वो विश्व करेगा हम से शुरुआत है। ऐसा कोई पल ना हो 24 घंटे में जह हम बेहोश हो जाएं बेहोश होते ही भूल बेहोश होते ही पाप ये करना हैं ये करना नहीं इसकी सुची बनाने से अच्छा अंदर होश को लाना है। होश आते हीं अपनेआप वो होगा जो होना चाहीए।

सबसे बड़ा होश है आत्म अभिमानी स्थिति, और सबसे बड़ी बेहोशी है देह अभिमान, वो बेहोशी आते ही गलतियां चालू होती हैं,गलतियों की एक श्रृंखला विकर्मों का पहाड़ टूट पड़ता है और चेतना दब जाती है और कुछ समझ नहीं आता क्या करें और क्या ना करे । गड्ढा है अगर होश में हूं तो गड्ढा में कभी नहीं गिरेंगे, परंतु बेहोशी है तो न चाहते हुए भी पैर फिसलेगा और मैं उसमें गिर जाऊंगा और जब जब गिरा तो उठने में बहुत समय लगता है, जब जब गिरा हूँ तो वापस उसी स्थिति को प्राप्त करना सब खो जाता है, एक बार गिरने के बाद इसलिए सूक्ष्म स्वयं का निरीक्षण।

सारे दिन भर विचार कैसे रहे विचार की डायरी, सारे दिन भर मूड कैसा रहा मूड की डायरी, सारे दिन भर फीलिंग्स कैसी रही फीलिंग्स की डायरी। स्वयं स्वयं को देखना है और जो कर्म किये वो किस श्रेणी में आते हैं क्या उसे श्रीमत कहेंगे यह मनमत से किए हुए कर्म कहेंगे तो अपने आपको देखना है। किसी को नाराज़ तो नहीं किया। सारे दिन भर में हमारे शब्द हमारे बोल हमारे व्यवहार ऐसे तो नहीं की जिससे आस पास वाले घायल हो जाए, दुखी हो जाएं। नाराज़ कर देना किसी को दिल तोड़ ना किसी का और वो व्यक्ति उदास हो जाए किसी पुरुषार्थी आत्मा को नीचे गिरा देना ये बहुत बड़ा विक्रम है। **क्रमश....**

एकरस स्थिति के आसन पर विराजमान रहो तब सिंहासन मिलेगा

आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर

हमारे एक बूंद खून से बच सकती है दूसरों की जिंदगी: विधायक संयम लोढ़ा

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान। मनुष्य का धर्म लोगों की हर वक्त में सेवा करना है। कई बार हम जिम्मेदारी को भूल जाते हैं। हमारा एक छोटा सा प्रयास दूसरों को प्राण दान दे सकता है। इसी तरह का महापुण्य रक्तदान है। हमारे एक बूंद खून से दूसरों की जिन्दगी बच सकती है। उक्त उद्गार मुख्य अतिथी मुख्यमंत्री के विशेष सलाहकार सिरोही विधायक संयम लोढ़ा ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन स्थित ज्ञान मोती मेडीटेशन हॉल में विश्व रक्तदाता दिवस पर रोटरी इंटरनेशनल तथा ग्लोबल हास्पिटल ब्लड बैंक के रक्तदाताओं के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। रोटरी इंटरनेशनल ग्लोबल हास्पिटल ब्लड बैंक इस इलाके के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसमें सभी को भागीदार बनना चाहिए। मेडिकल प्रभाग के अध्यक्ष डॉ अशोक मेहता ने कहा कि खून हमारे शरीर का एक ऐसा तंतु है जिससे हम हर कुछ कर पाते हैं।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा ने कहा कि हमारा प्रयास है कि इस जिले में किसी भी जरूरमंद को दूसरी जगह नहीं जाना पड़े। हास्पिटल की सेवायें इसके लिए हमेशा लोगों के लिए खुली है। ग्लोबल हास्पिटल के निदेशक डा. प्रताप मिडढा ने कहा कि सिरोही पिछड़ा क्षेत्र है। यहाँ गाँवों में रहने वाले ज्यादातर लोग अशिक्षित एवं गरीब तबके के हैं। ऐसे में समय पर इन्हें सुविधायें मिलती रहे। इसका प्रयास रहता है। डॉ. रोजा टुमा, डॉ. सपना भण्डारी, रोटरी इंटरनेशनल राजेन्द्र बाकलीवाल, दीपा राजगुरू ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

भाई-बहनों ने पौधारोपण का लिया संकल्प

» शिव आमंत्रण, मीरजापुर/उप्र। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा मीरजापुर आईटीआई के परिसर में पौधारोपण का कार्यक्रम रखा गया, कार्यक्रम में सबसे पहले बीके नीता दीदी ने आत्मशक्ति को बढ़ाकर प्रकृति को हम किस तरह स्वच्छ और हरा भरा रख सके उसके बारे में समझाया उन्होंने आगे बताया कि हमारे संकल्पों का प्रभाव पूरे प्रकृति पर पड़ता है, मीरजापुर सेवा केंद्र संचालिका बीके बिंदु दीदी जी ने आगे सभी को मेडिटेशन सिखाया जिससे सभी पौधों को सकाश दे सकें क्योंकि पौधे भी हमारी भावनाओं को कैच करते हैं। बिंदु दीदी ने बताया कि प्रकृति में ऑक्सीजन की कमी लगातार हो रही है इसलिए हम सभी को अधिक से अधिक पेड़ लगाना अतिआवश्यक है। सभी से प्रतिज्ञा भी कराई कि हम प्रकृति की सदा सुरक्षा करेंगे और अधिक से अधिक पेड़ लगाएंगे और सबके लिए अच्छा सोचेंगे।

पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण कर दिया संदेश

» शिव आमंत्रण, दिल्ली। मजलिस पार्क से संबन्धित उपसेवाकेन्द्र खेड़ाकला में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में पौधारोपण करते हुए भाई बहनों के साथ उप सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शुभ्रा बहन। इस दौरान उन्होंने पौधारोपण और वृक्षों के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य ▶ 150 रुपए, तीन वर्ष ▶ 450
आजीवन ▶3500 रुपए
नोट: कागज और प्रिंटिंग कीमत बढ़ने के कारण इस समाचार पत्र के दाम में बढ़ोतरी की गई है।

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 9414172596, 9413384884
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

योग पखवाड़े में बहनों ने लिया भाग

» शिव आमंत्रण, आगरा/उप्र। योग पखवाड़े का आज एकलव्य स्टेडियम, आगरा में उद्घाटन हुआ। उद्घाटन में पहुंचे सांसद राजकुमार चाहर, क्रीड़ा भारती प्रमुख राजेश कुलश्रेष्ठ, योगा गुरु परमजीत सिंह आदि उपस्थित रहे। आयुष मंत्रालय द्वारा 14 से 21 जून योग सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसमे कई एनजीओ संस्थाएं भाग ले रही है। आगरा के डीएम प्रभु नारायण ने जूम कॉन्फ्रेंस की मीटिंग के दौरान बताया कि आयुष कवच कोविड-19 द्वारा व्यक्तिगत या ग्रुप की फोटो उस ऐप में डालकर अपना और अपनी संस्था का नाम दर्ज कर सकते हैं जिससे संस्थाओं की संख्या का पता चलता रहेगा। आगरा म्यूजियम सेवा केंद्र से पहुंचे बी.के मधु बहन, बी.के. माला बहन, बी.के. संगीता बहन (स्पोर्ट्स विंग, आगरा कोऑर्डिनेटर), बीके सावित्री बहन, बी. के. रेखा बहन, बी.के गीता(स्पोर्ट्स विंग) बहनें प्रोग्राम में उपस्थित रहे।

नशामुक्ति जनजागृति यात्रा का आयोजन

» शिव आमंत्रण, रीवा/मप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रीवा के द्वारा एक नशा मुक्ति जन जागृति यात्रा का आयोजन किया गया। नशा मुक्ति जन जागरूकता यात्रा में सैकड़ों की तादात में रीवा नगर के बुद्धिजीवी समाजसेवी वा ब्रह्माकुमारीज संस्थान के साधक उपस्थित रहे। इसके साथ ही एक नशा मुक्तिविचार संगोष्ठी का आयोजन पंचमठ आश्रम में किया गया। जिसमें आश्रम के ब्रह्मचारी विजय शंकर जी महाराज ,डॉक्टर श्रीनिवास मिश्रा जी, मध्य प्रदेश शासन के सेवानिवृत्त इंजीनियर इन चीफ इंजीनियर आरके सिंह , डॉ. विकास श्रीवास्तव, युवा समाजसेवी सिद्धार्थ श्रीवास्तव, बीके नम्रता बहन, सब इंस्पेक्टर प्रमोद पांडे , श्रीकांत पाठक जी, डॉ. सरोज सोनी, ब्रह्मचारी गौरव महाराज, पयासी महाराज और बीके प्रकाश, सेवानिवृत्त जनरल मैनेजर पी के सोनी, असिस्टेंट इंजीनियर राकेश शुक्ला, ब्रांड मिस्टर नशा मुक्त रीवा प्राचार्य दीपक तिवारी , ब्रांड मैनेजर विपिन मशहूर कर, ब्रांड मैनेजर राजेश शाही, ब्रांड एंबेसडर दुर्गा प्रसाद भाई, आशीष सोनी, शाखा प्रबंधक शिखा चिटके तथासीपी मालवीय, कंचन गुप्ता, बीके राकेश शुक्ला, रवी कुमार गुप्ता, पुष्पा सोनी, ममता पटेल, रामरहीस, रूप कुमार पुरवार, विजय कुमार हीरानी, सुरेंद्र वर्मा, ने उपस्थित रहे और ब्रम्हाकुमारीज रीवा

समर कैंप में पौधारोपण कर दिया ईश्वरीय संदेश

» शिव आमंत्रण, इंदौर/इंद्रपुरी/मप्र। आजादी के अमृत महोत्सव में स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत ब्रह्माकुमारी के इंद्रपुरी सेवा केंद्र द्वारा तीन दिवसीय समर कैंप आयोजित किया गया जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम गीत, नृत्य और चित्रकला जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। साथ ही डॉक्टर सतीश पाठक (चीफ पैथोलॉजिस्ट, चोइथराम हॉस्पिटल) द्वारा हेल्थ टिप्स बच्चों को दिए गए और सेवाकेंद्र की इंचार्ज बीके पूर्णिमा बहन द्वारा बच्चों को पर्यावरण के महत्व की जानकारी देते हुए पौधारोपण किया गया। इस दौरान बीके सीमा बहन ने राजयोग की जानकारी दी गई।

तन और मन से व्यक्ति जब सुखी रहेगा, तभी सारी चीजों का सुख ले पाएगा: न्यायाधीश देवड़ा

» शिव आमंत्रण, अलीराजपुर/मप्र। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत,अलीराजपुर सेवा केंद्र की ओर से,सहयोग गार्डन, दाहोद रोड, में शाम 6 बजे से 7.30 बजे तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें भारी संख्या में जनमानस उपस्थित हुए। प्रोग्राम के मुख्य अतिथि जिला न्यायाधीश रामलाल जी सांकी, जिला न्यायाधीश दिनेश देवड़ा जी, जिला स्पोर्ट्स ऑफिसर, संतरा निनामा बहन एवं महिला बाल विकास अधिकारी शिवकली वरवड़े और ब्रह्माकुमारीज आलीराजपुर सेवा केंद्र इंचार्ज बीके माधुरी दीदी और साथी भाई बहन उपस्थित हुए। ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन, ने एक बहुत सुंदर राजयोग कमेंट्री द्वारा, उपस्थित जनमानस को गहन शांति का अनुभव कराया गया। कार्यक्रम के दौरान जिला न्यायाधीश रामलाल भाई ने कहा शारीरिक रूप से व्यक्ति सुखी रहेगा। तभी उस वस्तु सारी चीजों का वह सुख ले पाएगा, अन्यथा सारी चीजें से किसी काम की नहीं रहेगी। बालक जब पैदा होता है उसके कुछ वर्षों के बाद उसे योग सिखाना चाहिए, नहीं तो उसे बुढ़ापे में बीमारियों का सामना करना पड़ेगा।

जिला न्यायाधीश दिनेश भाई देवड़ा ने कहा आज मनुष्य बिल्कुल पीछे रह गया है। आज इंसान धन की लालच में अपने शरीर को न देखकर धन के पीछे भाग रहा है और जब धन का सुख लेने का समय आएगा, तब तक आपका साथ नहीं देगा। जिला सपोर्ट ऑफिसर संतरा निनामा ने कहा योग को डेली रूटीन में लाना सबसे बड़ी बात है। आप जितना फिट रहेंगे, उतना बीमारियां आपसे दूर रहेगी। महिला बाल विकास शिवकली ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारी माधुरी दीदी ने कहा कि घर में कोई भी एक टेंशन में, क्रोध में रहता है तो वह व्यक्ति पूरे घर में आग लगाता है। इसलिए पहले जब आप स्वयं तंदुरुस्त सुखी रहोगे, तभी आप दूसरों को खुशी और सुख दे पाओगे, इसलिए परमात्मा कहते हैं पहले स्वयं को दुआएं दो तो दूसरों की दुआएं मिलेंगी। बीके लालू ने म्यूजिकल एक्सरसाइज कराई। अरुण गहलोत ने आभार माना।

स्वास्थ्य शिविर में 170 लोगों की जांची सेहत

» शिव आमंत्रण, ग्वालियर/मप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के मेडिकल विंग द्वारा सिम्स मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल के सहयोग से 'निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर' का आयोजन हुआ। शिविर ब्रह्माकुमारीज़ की वीरपुर बाँध शाखा में किया गया। इसमें लगभग 170 लोगों ने निःशुल्क परीक्षण करवाया। शिविर में मीर पैथोलॉजी द्वारा ब्लड शुगर व कोलेस्ट्रोल की जांच निःशुल्क की गई। शिविर में सिम्स हॉस्पिटल से विशेषज्ञ डॉ. बी. के. गुप्ता (एम.एस.), नेत्र सहायक युवराज सिंह, दीपक कुरसेना, एन.बी. भार्गव, अमित सिंह भदौरिया, भूपेंद्र भदौरिया, कमल चौहान, सिस्टर निशा उपस्थित थे। बी.के. आदर्श दीदी (मुख्य इंचार्ज लश्कर क्षेत्र) बी.के. प्रहलाद भाई, बी.के. सुरेंद्र, बी.के. सुनीता, बी.के. योगेश, बी.के.विजेंद्र, शिवकुमार, मुन्नू, अमन मौजूद रहे।

काशी विश्वविद्यालय में राजयोग पर हुई संगोष्ठी

» शिव आमंत्रण, वाराणसी/उप्र। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर महिलाओं को मानसिक रूप से सशक्त किए जाने के उद्देश्य से विशेष योग शिविर का आयोजन पर्यटन अध्ययन संस्थान के सभागार में किया गया। शिविर में छात्र -छात्राओं को बीके विपिन ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुए कहा कि नकारात्मक शक्तियों से दूर रहकर सकारात्मक ऊर्जा को सक्रिय करें। मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमारी तपोशी दीदी ने कहा कि राजयोग ध्यान हमें मानसिक शक्ति प्रदान करता है और हमारे अंदर स्थित शक्तिपुंज को जागृत कर हमें स्व को पहचानने और विभिन्न नकारात्मक ऊर्जा से बचकर सकारात्मक कार्य करने की प्रेरणा देता है। महिला सशक्तिकरण प्रकोष्ठ नोडल अधिकारी डॉ. निशा सिंह ने किया सभी का स्वागत किया। संचालन प्रज्ञा राय ने किया। आभार दीपा सिंह ने माना।

योग दिवस **शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में योग कार्यक्रम आयोजित**

राजयोग ध्यान से मिलती है जीवन में स्थाई खुशी

» शिव आमंत्रण, रायपुर/छग। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के हजारों साधकों ने शान्ति सरोवर में राजयोग मेडिटेशन के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योगासनों का भी अभ्यास किया। ब्रह्माकुमारी संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने कहा कि राजयोग से जीवन में स्थायी खुशी प्राप्त की जा सकती है। वर्तमान समय लोग खुशी को भौतिक पदार्थों में ढूँढ रहे हैं किन्तु भौतिक पदार्थों से स्थायी खुशी नही मिल सकती है। किसी भी मनुष्य के जीवन में खुशी और शान्ति उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति होती है। जिसे पाने के लिए वह पूरी जिन्दगी प्रयास करता है। जब मनुष्य की खुशी भौतिक वस्तुओं पर आधारित होती है तो वह खुशी अल्पकालिक हो जाती है। मनुष्य खुशी को बाहरी चीजों में ढूँढता है। खुशी उनके ही पास है, उसे अनुभव करने के लिए आत्म अनुभूति और परमात्म अनुभूति करने की जरूरत है। दरअसल विचारशक्ति का ही नाम मन है। विचार शक्ति बहुत बड़ा खजाना होती है। एक विचार किसी को खुशी दे सकता है तो वहीं वह किसी की खुशी छिन भी सकता है। आत्म अनुभूति और परमात्म अनुभूति राजयोग से आसानी से की जा सकती है। इसे राजयोग इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह हमको कर्मेन्द्रियों का राजा बनाता है। स्वयं पर नियंत्रण करना सिखलाता है। पतंजलि योग प्रशिक्षक विपुल भट्ट ने सभी के लिए प्राणायाम-योगासन कराए।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

'परिवर्तन'

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। जीवन मतलब परिवर्तन। यहां कुछ भी स्थायी नहीं है। जैसे दिन के बाद रात, बचपन के बाद युवावस्था और बुढ़ापा आना निश्चित है। इसी तरह सुख के बाद दुख भी निश्चित है, क्योंकि इस सृष्टि रंगमंच पर कुछ भी स्थायी नहीं, जिसे अपना माना जाए, यहां तक कि जिस पांच तत्वों की देह पर हम इतना नाज और अभिमान करते हैं एक दिन वह भी जर्जर होकर इन्हीं पांच तत्वों में विलीन हो जाती है। स्थायी, शाश्वत और अनंत कुछ है तो वह हैं परमात्मा। सृष्टि चक्र में प्रकृति और पुरुष (आत्मा) दोनों परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरती हैं। एक मात्र परमात्मा ही हैं जो इस परिवर्तन से अप्रभावित रहते हैं। चूंकि आत्मा, अजर, अमर, अविनाशी है लेकिन वह भी कालखंड में अनेक शरीर धारण कर अपना पार्ट बजाती है और सुख-दुख की अनुभूति कर्मों के परिणामस्वरूप प्राप्त करती है।

इस परिवर्तनशील संसार को जो व्यक्ति जितनी जल्दी स्वीकार कर इसके मर्म को गहराई से जान लेता है, तो उसकी जीवन यात्रा आसान हो जाती है। समय के साथ कदमताल करते हुए चलना और जीवन में घटित हो रहीं घटनाओं, परिस्थितियों के अनुकूल खुद को सामंजस्य बिठाते हुए आगे निकल जाना ही परिवर्तन यात्रा है। 'परिवर्तन संसार का नियम है' इस ध्येय वाक्य की गहराई में छिपे निहितार्थ को जानने, समझने के बाद जीवन के कई पहलुओं की गुत्थी अपने आप सुलझ जाती है।

संस्कार परिवर्तन सबसे अहम: परिवर्तन की इस प्रक्रिया में जीवन में सबसे अहम और महत्वपूर्ण कारक होता है संस्कार परिवर्तन। जब दिव्यगुणों की धारणा की ओर मन-बुद्धि एकाकार होने लगती है तो संस्कार परिवर्तन या संस्कार शुद्धि की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से शुरू हो जाती है। दिव्यगुणों का मनन, चिंतन, अध्ययन उन्हें स्वभाव में लाकर कर्मों में चरितार्थ करता है। जब कर्मों की निरंतरता एक लंबे काल तक नियमित रूप से अनवरत चलने लगती है तो परिवर्तन की प्रक्रिया कड़े से कड़े दुखदायी संस्कारों को पिघलाकर पत्थर से पारस बना देती है। दिव्य गुण ही संस्कार परिवर्तन की चाबी हैं। जीवन में आध्यात्म और राजयोग ध्यान को शामिल कर लेने के बाद उपहार के रूप में दिव्यगुणों रूपी गुलदस्ता हमें प्राप्त हो जाता है।

✓ घटनाओं, परिस्थितियों के अनुकूल खुद को सामंजस्य बिठाते हुए आगे निकल जाना ही परिवर्तन यात्रा है।

सफलता-असफलता परिवर्तन पर निर्भर-
हम देखते हैं कि कई बार योग्य, अनुभवी और पढ़े-लिखे लोग जीवन में उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं जितने कि वह उसके योग्य थे। जबकि कम पढ़े-लिखे और कम अनुभवी व्यक्ति जीवन की ऊंचाइयों पर पहुंच जाते हैं। इसके पीछे मुख्य बात यह निकल कर आती है कि उसने परिवर्तन को स्वीकार किया। अपनी रोजगार, व्यवसाय के अनुकूल खुद को ढाल कर अपनी आदतों, व्यवहार को परिवर्तित कर लिया। उसके मर्म को समझ लिया। वहीं जो ज्यादा पढ़ा-लिखा था वह अपने कड़े संस्कारों के वश परिवर्तन की इस प्रक्रिया को स्वीकार ही नहीं कर पाया। ऐसी स्थितियों में वह व्यक्ति विकास के क्रम में पीछे रह जाता है। यही बात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होती है। फिर चाहे वह संबंध हों या स्वभाव-संस्कार।

आध्यात्म अर्थात् परिवर्तन: आध्यात्म अर्थात् आत्मा का अध्ययन। आत्मा के दिव्य गुण, शक्तियों को जानने, समझने के बाद जीवन में परिवर्तन करना आसान हो जाता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में परमात्मा की याद और परमात्मा का साथ, वरदान बनकर जीवन के लक्ष्य को पूर्णतः की ओर ले जाते हैं। वर्तमान समय सृष्टि के इसी महापरिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है, जिसमें स्वयं परमपिता परमात्मा अवतरित होकर मनुष्यात्माओं को सहज राजयोग की शिक्षा देकर नई सृष्टि में चलने की तैयारी करा रहे हैं। सृष्टि की इस अद्भुत और परिवर्तनकारी घटना को जो व्यक्ति जितनी जल्दी समझकर उसे आत्मसात कर लेगा उसकी जीवन यात्रा उतनी ही आसान, सुखद और आनंदमय बन जाएगी।

शुभ रक्षा बंधन

रक्षा-बन्धन का त्योहार न जाने कितने दूर वालों को नजदीक और नजदीक वालों को और ही नजदीक लाकर एक मीठी गुदगुदी, विश्वास और अपनेपन की भावना जगाकर नवीनता भर जाता है। किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होने के कारण इसके पीछे एक विशाल भावना छिपी हुई है, वह है भाई-बहन के सत्य, अविनाशी पावन त्याग भरे रिश्ते की भावना।

स्वभाव से स्वतन्त्रता प्रेमी होने के नाते मनुष्य हर बन्धन से छुटना चाहता है। परन्तु यह न्यारा-प्यारा बन्धन है, जिसे उत्सव समझ कर सभी खुशी से बन्धवाते हैं। बन्धन भी दो प्रकार के होते हैं। एक है सांसारिक अर्थात् कर्मों का बन्धन, जो मानव को दुःख देता है और दूसरा है अविनाशी या धार्मिक बन्धन, जो मानव के लिए सुख लेकर आता है। रक्षा-बन्धन भी अपने शुद्ध रूप में एक आध्यात्मिक रस्म है, लेकिन मात्र सांसारिक रूपसे मनाने के कारण इस तयोहार के महत्व कम हो गई है।

मुख्य रूप से इस त्योहार के पीछे यही राज बताते हैं कि इस दिन भाई बहन को रक्षा का वचन देता है और बहन भाई को राखी बान्धती है और मुख मीठा कराती है। परन्तु देखा जाता है कि छोटा भाई शारीरिक दृष्टिकोण से भी बहन की रक्षा करने में असमर्थ हो सकता है। कई परिस्थितियों में भाई दूर रहता हैं और समय पर अपनी बहन की रक्षा करने में असमर्थ होता है। फिर यह भी बात आती है कि क्या रक्षा की जरूरत केवल बहन को ही है, भाई को नहीं होती?

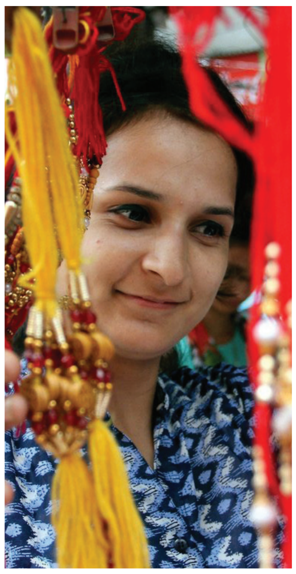

रक्षा-सूत्र बांधने के साथ-साथ इस पर्व की दो रस्में और भी हैं। एक है मस्तक पर तिलक लगाना और दूसरा है मुख मीठा कराना।

इतिहास तो ऐसी नारियों की गाथा से गौरवान्वित है जिनसे पुरूषों ने भी रक्षा की कामना की। जैसे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और रानी दुर्गावती। फिर रक्षा का उत्तरदायित्व बचपन में पिता पर, जवानी में पति पर, बुढापे में पुत्र पर माना जाता है। तो रक्षा की जिम्मेवारी केवल भाई पर ही क्यों रखी गई? सदियों से इस त्योहार के मनाए जाते रहने पर भी आए दिन बलात्कार, अपहरण जैसी कितनी घिनौनी घटनाएं घटती हैं। तो क्या उन भाइयों को राखी नहीं बांधी जाती हैं?

एक और भी सोचने वाली बात है कि क्या देवकी ने कंस को राखी नहीं बांधी होगी, जब कि आर्य ग्रन्थों के अनुसार वह सनातन धर्म के अनुगामी थे? छत्रपति शिवाजी ने गोहरबानु के साथ जो रिश्ता निभाया वह तो सभी जानते हैं जबकि गोहरबानु ने शिवाजी को कभी भी राखी नहीं बांधी थी, वह तो मुसिलम धर्म को मानने वाली थी। रक्षा-बन्धन कोई स्थूल बन्धन नहीं है। धर्म अर्थात् श्रेष्ठ गुणों की धारणा। जो धर्म की रक्षा करता हैं, धर्म उसकी रक्षा करता है। जो मन-वचन-कर्म से पवित्रता की मर्यादा की रक्षा करता है, पवित्रता उसकी रक्षा करती है।

बहन-भाई के नाते में पवित्रता समाये होने के नाते बहनें यह शुभ कार्य करती हैं। परन्तु सदा काल की पवित्रता देने वाले और सदा काल के लिए सुरक्षा की गारन्टी देने वाले एक परमात्मा पिता ही है। वही सर्व समर्थ हैं सृष्टि नाटक के नियन्ता हैं और इसके परिवर्तक हैं। कलियुग के अन्त में कृपानिधि परमपिता परमात्मा स्वयं अवतरित होकर हर मनुष्य आत्मा को श्रेष्ठ दृष्टि, वृत्ति और कृति की राखी बांधते हैं। इस कार्य में वह स्त्री-पुरूष का भेद न रख कर हर आत्मा को विकार ग्रसित देखकर उसे राखी बंधवाने का अधिकारी समझते हैं। जहाँ पवित्रता आ जाती है वहाँ सर्व प्राप्तियां पीछे-पीछे आती हैं।

जिस प्रकार कमल का फूल न्यारा और प्यारा रहने का प्रतीक है, इसी प्रकार रक्षा-बन्धन बुराईयों से रक्षा करने वाले आध्यात्मिक बंधन में बंधने का प्रतीक है। बात याद रखने के लिए पल्ले से गांठ बांधने का रिवाज हमारे यहाँ प्रचलित है। इसी प्रकार राखी भी भगवान के साथ उसकी श्रेष्ठ मत पर चलने का वायदा है।

रक्षा-सूत्र बांधने के साथ-साथ इस पर्व की दो रस्में और भी हैं। एक है मस्तक पर तिलक लगाना और दूसरा है मुख मीठा कराना। तिलक वास्तव में आत्म-स्मृति का प्रतीक है, कि हम सभी शरीर रुपी कुटिया की भृकुटी में स्थित चेतन, दिव्य आत्मा हैं। और मुख मीठा कराने के पीछे भाव है कि हम सभी को सदा मीठे वचन बोलें। हमारे बोलचाल और व्यवहार में कहीं भी कड़वाहट ना हो। अतः रक्षा-बन्धन वह न्यारा-प्यारा बन्धन है जो मनुष्य आत्माओं को सब बन्धनों से मुक्त कर देता है।

Published on 14th of each month & Issue- August 2022
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month
■ प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ■ संपादकः ब्र.कु. कोमल ■ संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ■ RNI No.: RJHIN/2013/53539